।। श्री राजश्यामा जी सहाय ।।
।। श्री जी साहेब जी महेरबान ।।

ब्रह्ममुनि परमहंस श्री जुगलदास महाराज जी कृत

मन मोहन

रसानंद सागर

(परिशिष्ट में कठिन शब्द सहित)

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान
श्री निजानंद आश्रम,
नेशनल हाईवे-८,बायपास,
एल अेन्ड टी नोलेज सीटी के पास,
सयाजीपुरा,वडोदरा - 390019
फोन-98980 00168, 95588 00124

ई.सन् - 2014 वि.सं - 2071
प्रथम आवृति - 2000 मूल्य - 40/-

:प्राप्ति स्थान :

श्री निजानंद आश्रम, वडोदरा

श्री निजानंद आश्रम,रतनपुरी
जि.-मुजफ्फरनगर,
वाया- खतौली (उ.प्र)

विजय कुमार शर्मा
श्री निजानंद साहित्य भंडार
श्री बंगलाजी मंदिर के दरवाजे के पास
श्री ५ पद्मावती पुरी धाम.पन्ना (म.प्र)
मो- 094254 53946

Shri Nijanand Foundation(int)
Lord prannath Divine Center
914, 2nd street, MACON,
GA,USA-31201
Mo- 478-808-4079, 973-700-9238

श्री प्राणनाथ जी मंदिर,शामलाजी
ता: भिलोडा, जि: अरावल्ली (गुजरात)

श्री जी साहेब जु सेवाश्रम
अनारा,वाया-कपडवंज,जि.-खेडा

कंपोज & डीजाईन :-
श्री निजानंद आश्रम,वडोदरा
मितुल पटेल,
कु. बिनल पटेल

Nijanand App

प्रस्तावना

श्री राज श्यामाजी की अति लाडली,लाहूत से उतरी हुई ब्रह्मात्माओं के कर कमलों में बह्ममुनि परमहंस महाराज श्री जुगलदास जी की एक और लाहूती भेंट रखते हुए दिल में अति आनंद का अनुभव कर रहा हुं,यह अमूल्य सौगाध है।

"मन मोहन रसानंद सागर"

जैसा नाम है ऐसे ही गुण-न्यामतों से आलोकित यह छोटी सी बुक आप सबको असिमीत परमधाम में पहूंचाने में सक्षम है। यदि हम क्षणिक सुखो के मोह से निकलकर अखंड आनंद की अनुभूति करना चाहते है, तो यह अमूल्य औषध से परहेज करके,देहाध्यास से मुक्त हो कर पढेंगे तो अवश्य हमारा हाल बदल जायेगा।

चर्चनी और चितवनी सुंदरसाथ को कठिन विषय लगता है,क्योंकि हमें चर्चनी-चितवन के विशारद-महात्मा रुखी सुखी गिनती बताकर सिर्फ भौगोलिक और स्थापत्य बताते है,जिससे सुंदरसाथ वाणी बीतक से तो जूडा है,लेकिन चर्चनी और चितवन में डूबने का प्रयास कम कर रहा है,क्योंकि, उसमें मन को मोहित करनेवाला रसास्वाद आता नहीं है।

दस साल पूर्व मेरे हाथ में कुछ पन्ने कहींसे प्राप्त हुए थे, उसको पढकर चार दिन तक ऐसा नशा छा गया था कि बिलकुल, यह फानी दुनिया से अपने आप अलग ही हो गया था। तब से यह

ग्रंथ की खोज करता था। चार साल पूर्व,भांडेर(दतिया) जानेका मुझे अवसर मिला। वहां पर आपके द्वारा बनाये गये कुदरती वनस्पति से बने हुए रंग से चित्रित १०-१२ फिट से भी ज्यादा लंबा परमधाम पट्ट एवं नमक खाई हुई रचनाए मिली, उसमें मनमोहन रसानंद सागर और प्रेमपत्री भी मिली। जो सुंदरसाथ को लाभान्वित करने हेतु यह छोटी सी पुस्तिका का परिशिष्ट में कठिन शब्दार्थ सहित प्रकाशन किया जा रहा है।

श्री प्राणनाथ जी के प्रादुर्भाव के 396 इस वर्ष हुए,वि.सं.2075 में 400 वर्ष पूरे होंगे। इस मंगलमय अवसर "चतुर्थ शताब्दी" के पांच वर्ष दरम्यान निजानंद साहित्य का प्रसार-प्रचार हेतु श्री प्राणनाथ जी वैश्विक चेतना अभियान के अंर्तगत यह छोटी लेकिन अमूल्य पुस्तिका जीवन को नई दिशा देगी, इतना ही नहीं पू.पाद सरकार श्री द्वारा दिया गया आदेश "वाणी, मंथन,चितवन और रहेनी का कोई विकल्प नहीं है" उस रुहानी आदेश को चरितार्थ होने में हमारा मार्गदर्शन करेगी-रास्ता प्रशस्त होगा।

ब्रह्ममुनी परमहंस महाराज श्री जुगलदास की भाषा इतनी रसीली और गतिशील है कि, पाठक सुंदरसाथ निर्मल हृदय से पढेगा तो अवश्य ही हृदयाकाश में श्री राजश्यामा जी के चरणकमल स्थित होंगे और अपने आपको श्री राजश्यामा जी की सुहागिन अंगना नार की अनुभूति होगी। आप श्री राजश्यामा जी के साथ साथ पचीस पक्षो में विहार करते हुए श्री राजजी के ईश्क के सागर

Nijanand App

में डूबकी लगाते हुए देहाध्यास से उपर उठ जायेगें। आपको यह अनुभूति हो ऐसी प्रार्थना करते हुए, ब्रह्ममुनि परमहंस महाराज जी का संक्षिप्त परिचय करवाना चाहता हुं।

।। श्री जुगलदास महाराज जी का परिचय।।

निजानंद संप्रदाय में अनेक ब्रह्ममुनि हुए है, उन सबमें महाराज श्री जुगलदास जी का नाम शिरोमणी है। आपका मूल नाम एवं बचपन का बीतक नहीं मिलता है,लेकिन

(१) श्री जुगलदास महाराज की पाती
(श्री देवचंद महाराज की पाती)
(२) बडीवृत
(३) रसानंद सागर
(४) प्रेमपाती

आपकी रचनाए ऐसी है, जो समग्र सुंदरसाथ को परमधाम में अवश्य विहार कराएगी।

आपका महारानी लक्ष्मीबाई के समय में प्रार्दुभाव हुआ था। क्यां कि, जब झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अग्नि स्नान किया था, तो उसकी अस्थिफूल आप चुनकर अपने स्थान में भांडेर(दतिया) ले आये थे। शाहगढ के महाराजा बखतबलि जू के दरबार में आपको उच्च स्थान प्राप्त होता था। इस घटना से अनुमान है कि,आपका बाल्य काल १७ वीं सदी का अन्त या १८ वीं सदी का शताब्दी के पूर्वार्ध में गुजरा है। आपके महान अनुयायी थे,

परमहंस चतुरदासजी,(मटियारी)परमहंसश्री चेतनधाम (गंगापुर,बिहार) के संस्थापक चेतनदासजी एवं परमहंसश्री जीवनदास जी (गढपरोली) उपरोक्त तीनों स्थान प्रसिध्ध है।

आप तारतम ग्रहण करने के बाद श्री ५,पद्मावतीपुरी धाम गये थे। सुना है कि, उस दिन धाम चबुतरा पर कोई अमीर सुंदरसाथ ने रसोई सेवा की थी। पक्की रसोई ज्यादा बनी थी, जिसको हरिजन उठाकर बहार फेंकने जा रहे थे, आपने पुछा "इतना ढेर सारा भोजन कहांसे लाकर फेंक रहे हो?" हरिजन लोगोने ब्योरा दिया। आप के दिल में यह आया कि, यह तो महाप्रसाद है, जो धनी के दरबार का जुठन ब्रह्माजी नहीं पा सके वो मुजे मिल रहा है। आपने धनी के दरबार का जुठन महाप्रसाद के भाव से आरोगा। कुछ आसपास घूमते हुए लोग ने यह दृश्य देखा तो धाम चबुतरा पर जाकर हल्ला गुल्ला मचाया कि, यह महात्माने हरिजनों के स्पर्शवाला जूठन खाया है, इस लिए आपको धाम चबुतरे पर प्रवेश करने से रोका गया। और लोगों ने भी इस पर अपनी अपनी नाराजगी जताई। वो समय छुआ छूत का था। धनी ने तो छुआ छूत से त्रिगुण फांस से छूडाया था, लेकिन उससे उलटा व्यवहार हुआ आपके साथ। प्रवेश नहीं मिला। धाम चवुतरे से बाहर पूरे दिन रोते रहे, धनी से अरजी करते रहे कि, क्या महाप्रसाद ग्रहण करना गुनाह है? विरह विलाप करते रहे, उस रात्रि को धनीने दर्शन दिया और आपको वापस भांडेर(दतिया)जानेका आदेश दिया, उसी

Nijanand App

समय से आप के दिल में परमधाम की न्यामते आती गई। ६ महिने आंखो पर पट्टी लगाकर ध्यान चितवन में डूब गये और धनी ने आपकी रुह को रंगरसीली अद्वैत लीला का मीठा मीठा रसास्वाद कराया। इसी के फल स्वरुप "मन मोहन रसानंद सागर, प्रेमपत्री, बडीवृत और पाती" है। आपने १२ वी साल तक परमधाम के मूल स्वरुप,पचीस पक्ष,लीला का रसास्वाद लिया।

आप ने जो प्रेमपत्री नाम दिया है, सार्थक है। ब्रह्मात्माओं का,धनी से रुखासुखा प्रेम-इश्क नहीं है वास्तव में यह"Divine Romentic love" है,उसको शब्दो में वर्णन करना असंभव है,लेकीन आपके एक एक हरफ में जो माधुर्य, मीठा मीठा रस घोला है,यह सब आपकी परमधाम एवं मुल स्वरुप एवं लीला का तादुश्य अनुभूति,अहेसास और अनुभव का दर्शन है।

सुंदरसाथ इस मन मोहन रसानंद सागर एवं प्रेमपत्री को बार बार पठेगा, सब मिलके सहुर करेगा तो हमारी रहेनी में अवश्य सुधार आयेगा और आप श्री जुगलदास जी महाराज ने जो नव हरफो में लिखी हुई बातो पर, सुंदरसाथ अमल करेगा तो ईस असत् ब्रह्मांड में सत् की अनुभूति,दर्शन एवं अकथ ज्ञान के सागर में झीलना कराने का दावा लिया है, जमानत ली है। "इत ही बैठे घर जागे धाम" श्री जी का कथन सिद्ध होगा ।

रसानंद सागर निजानंद आश्रम(बरोडा) से छीपी देवचंद जी पाती को पठा था, रसानंद सागर को बार बार पठकर उसमें

डूबने का मौका धनीने दिया है। आप सब पाठक ब्रह्मसृष्टि को भी उनकी रचनाए आत्मसात करने से कभी भी, कही से भी नहीं मिला होगा इतना मीठा अति मीठा निजानंद-मन मोहन रासानंद सागर और प्रेमपत्री को पढकर मिलेगा।

इस मन मोहन रसानंद सागर की भूमिका लिखने के लिए मेरा दिल असमर्थता की अनुभूति करता है।

अंतत: सब पर धनी श्री राजश्यामा जी ,सच्चिदानंद स्वरुप, श्री प्राणनाथ जी सत्गुरु की कृपा-महेर की बुंदे बरसती रहे,ऐसी प्रार्थना सह सब के कोमल कोमल श्री चरणो में कोटान कोट प्रणाम । कोई त्रुटि रह गई हो तो आपका छोटा सा साथी समझ कर सूचित करें और क्षमा करें।

आपकी चरणरज

श्री रमणभाई के.पटेल

श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान,

श्री निजानंद आश्रम, वडोदरा

Nijanand App

श्री विषयानुक्रमणिका

अथ ग्रथं प्रारंभ 01
श्री रंगभवन 03
पुखराज महल 04
होज कोसरताल 06
श्री अक्षरधाम 07
मानिक पहाड 09
अष्ट सागर 09
किशोर लीला 10
आनन्द लीला 12
उत्थापन 15
झांकी तीसरी भोम से 17
प्रातः काल का सिनगार 23
पहला सिनगार श्यामाजी का 26
बाल भोग 28
तीसरी भोम मे निरत 29
दूसरे प्रहर की भोजन लीला 31
रसोइ की हवेली 33
आचमन बीडा 36
तीसरा प्रहर को उत्थापन 39
पशु पक्षियों का झुंड 40
सुखपाल यात्रा 42
यमुना वन शोभा 48
वन विलास 49
पाल में हाट प्रदर्शन 52
जल यात्रा 53

मनमोहन रसानन्द सागर

पुखराज पर्वत पर आरोहण 55
पश्चिम की चौगान में घुड दौड 57
छः घडी की लीला 61
जल क्रीडा 66
सांयकाल का सिनगार 69
अक्षरातीत की आर्दश सवारी 71
आज्ञा 75
चौथा प्रहर की भोजन लीला 76
चौथी भोम 76
नृत्य लीला 79
शयन लीला 83
संसार आबर्तन 85
मूलमिलावा 88
परिशिष्ट 97

Nijanand App

।। अथ ग्रंथ प्रारंभ ।।

श्री पूर्णब्रह्म स्वलीला अद्वैत किशोर किशोरी श्याम शयामा जी की जय जय जय। श्री निजधाम की आनंद तरंगे अखंड अपार है सो अनुभव द्वारा ही सर्व मोहन रसानन्द सागर लिखा जात है।

श्री निजधाम कैसो है कि अनुभव से और शब्द से अतित है। षट प्रमाण से न्यारा है। वैकुंठ गौलोक नित्य वृन्दावन के परे है। चार वेद छः शास्त्र अठार पुराण और पंच वासना की बानी में अति गुह्याद गुह्य छिपा है। जिस प्रकार आत्म देह में छिपी हैं और कर्मकांड,उपासनाकांड,ज्ञानकांड करके और अनंत कोटि कष्ट करके,वेद शास्त्र पुराणों करके कोई ब्रह्मांड के ग्यान ध्यान करके नाहीं पाईयत है। श्री सतगुरु पूरण ब्रह्म मिले बिन और पूरण प्रेम उपजे बिन उपाय दुती नास्त है और जाही छिन श्री सतगुरु सांई मिले ताही छिन याके संपूर्ण मनोरथ पूरण भए। पूरण ब्रह्म मिले– कोट कलपन को मार्ग जो निजधाम के हैं सो ततखिन पोहोंच जात हैं, श्री सतगुरु सांई ठौरही बैठे पगसे पंथ करे बिन पाव पलक में श्री निजधाम पोहोंचावत है।

श्री निजधाम के एक छिन को सुख कैसा है कि जब से ये माया पैदा भई है तब से लेके महाप्रलयलों असंख्य जुबां करके बरनन करे तो एक छिनको सुख न कहि पावे । ता परमधाम का वर्णन इस माया में किनहूं विधसों नाहीं हो सकत हैं, परंतु श्री पूरनब्रह्म, पूरणानन्द अपनी दुलहिन को जागृत करके निजधाम

पहुँचावेके कारन, हुकम जोस द्धारा होय के, कोटांसा बरनन करत हैं। ऊपर दिल जुबान मोमिन के बैठके आपै आप बरनन करत हैं। जो प्राणी भेद रहित और चर्मद्धष्टिसे अग्यानी हैं सो सिर मोमिनके देत हैं। ताथें सुख निजधामको और बरनन परमधाम को एक धाम धनी ही जानत है दुसरा कोई नाहीं जान सकता।

फेर निजधाम कैसो हैं कि परात्पर अखंडानन्द को एक अपरम्पार महा समुद्र भरो हैं। नित्य वृन्दावन विषे उस महा समुद्र की एक बूंद आन परी हैं और उस बूंद का वहां पर महा समुद्र हुआ। फेर नित्य वृंदावन के सुख समुद्र में से बूंद बीच गोलोक के आई,तहां उस बूंद का गोलोक में सुख समुद्र हुआ। इसी व्रज गोलोक से बूंद बीच वैकुंठ के आई और वैकुंठ से बीच स्वर्ग के आई फेर स्वर्ग के आई फेर स्वर्ग से बीच मृतलोक के आई हैं। सो इस सुख को राजा पातशाह, शाहनशाही सुख बतावत है और महा पद करके जानत हैं,तो हे श्री मोमिनजी! श्री निजधाम के सुखके आगे,चौदे भवन की पातशाही के सुख कैसे हैं जैसे काग विष्ठा,सूकरी विष्ठा, महा अगिन, महा नर्क के समान होत हैं। और श्री श्याम श्यामाजी साथजी सुंदर कैसे हैं कि, जितेक इस ब्रह्मांड रेणुका हैं इतेक युसुफकी और रति रंभा,उर्वशी,कामदेवकी,सती सावित्री,लक्ष्मी नारायण की सुंदरताई इक्कठी कीजे तो कैसे हैं जैसे सूर्य के आगे तारागण। साक्षात चंद्रमा के आगे चित्रामन को चंद्रमा। जैसे वैकुंठनाथ की सुंदरताई के आगे अनंतकोटि ब्रह्मांड के चौदे भवन में जितेक रेणुका

Nijanand App

हैं, जो इतेक सूर्य चंद्रमा बिजुली इक्कठी रोशनी होवे तो पूरन ब्रह्म के एक नख के तेज के आगे ऐसे ढंप जात हैं। इनहीं पूरनब्रह्म अक्षरातीत की जमाल रोशनी से, पांच तत्व, पांच तन्मात्रा, दस इन्द्रियां और चार अंत:करण, अनंत प्रकृति, मोहोल मंदिर, बन बगीचे, पशु पक्षी और अनंत कोट विध की जोगवाई रोशन हैं सो सब इसी जमाल रोशनी के हैं।

श्री परमधाम कैसो है कि केवल आनंद ही की मूर्ति है और जिमीन कैसी है कि रंग भवन से आठ हूं दिसा अपरम्पार बेसुमार है और लामुंतहा, वेकिनार हैं। ज्यों कर ब्रह्मांड के आगे खस –खस का दाना, यों कर महा इंडके आगे यह ब्रह्मांड हैं। इसी विधसे श्री परमधाम के आगे महा इंड हैं।

।। श्री रंगभवन ।।

अब श्री परमधाम कैसा है कि जाके मध्य भाग विषे श्री रंगभवन सोभायमान हैं। श्री रंगभवन कैसा हैं कि सर्व मोहोलों में खासलखास मोहोल है। पिया प्रीतम जी समस्त सुन्दर साथ को लेके हमेशा हमेशा छ: प्रहर आनन्द लीला करते हैं, सो श्री निजधाम को जो मध्यस्थल हैं, ता विषे विराजमान है। भोम से मंदिर भर ऊँचा छ: हजार मंदिर के गिरद उज्जल हिरेका एक चबूतरा हैं। उस चबूतरे की किनार को मंदिर भर की जगह छोडके आनंदरुपी छ: हजार मंदिर और छ: छ: हजार थंभों की बीच में दोहोरी हार हैं। तिनकी भीतर अस्सी – अस्सी मंदिर की एक– एक हबेली है ।

ऐसी – ऐसी दो सौ एकतीस की चार हारें फिरी हैं। तिनके भीतर सर्व सुखनको दाता साठ मंदिर का चौक है। उस चौक के भीतर कम्मर भर ऊँचो चौसठ मंदिर की गिरद एक हीरे का चबूतरा हैं। उस चबूतरे के किनार पर चौसठ रंगों के चौसठथंभ लगे हैं। तले सिंदुरिया रंद नूर की गिलम बिछी है और ऊपर नूर को चंन्द्रवा झलकत है। मध्यस्थल में सिंहासन रोशन है। तिस सिंहासन के ऊपर पूर्णब्रह्म अक्षरातीत सहित प्रियाजी के विराजे हैं। सिंहासन के गिरदवांए चबूतरे के ऊपर बारह हजार सुन्दरसाथ विराजमान हैं। जिस बखत रुहों को खेल देखावने बैठे हैं,उस बखत रंगभवन के तले के खंड में बैठे हैं और रंगभवन की नवभोम दशमी चांदनी है। दशमी चाँदनी में अनन्त विस्तार हैं, सो अकह अगम अपार है और कहने लिखने से बाह्य है। तातें अति सूक्ष्म तें सूक्ष्म इशारत करत हैं।

।। पुखराज महल ।।

अब रंगभवन से चार लक्षकोस अन्तर से एक पुखराजी नंगका मोहोल बांई तरफ विराजमान हैं। ताको पुखराजी पहाड (महल)कहते हैं। चार लक्षकोस की गिरद हैं और चार ही लक्षकोस को ऊँचो हैं। ताकी चाँदनी पर एक आकाशी महल हैं सो बेसुमार ऊँचा हैं और बीच इसके अनंत कोटि हवेली मोहोल मंदिर हैं। अनन्त कोटि बाग बागीचे,गुलबन गुलजार फुल बगीया और ताल,कुंड,बावडी आदि सब ठौरों हैं। अनन्त कोटि नेहेरे चलती है। अनन्त कोटि कारंजे और फुहारे उडत हैं। और नख सिखलों श्रृंगार

Nijanand App

किए हुए कोटान कोट झुंड हस्ती मतंगों फिरत है, और कोटान कोट झुंड घोडों, शेरों, शुतरों, सिहों, पशु पक्षियों के फिरत हैं, सो अति सुन्दर जोतिमय सरूप हैं।

इस पुखराज के पश्चिम उत्तर को दो तरफ दो घाटियां हैं। जिमी से चार लक्ष कोसकी ऊँची छः लक्ष कोस को चढव है और ऊपर सिढी तले मोहोलात है। पुखराज की चाँदनी पर चारहूँ दिशा को चार दरवाजे हैं सो घाटी दरबाजन को लगी है। मानो जिमी से चार लक्ष कोस ऊँचेलों सीढियाँ लगाई है। अनन्त कोटी शोभा धरे हैं। चार लक्ष कोस की गिरद और चार ही लक्ष कोस का ऊँचा बंगला है। ता विषे अनन्त कोटि मोहोल, मंदिर हवेली, बाग बगीचे हैं और नाना रंगों के पशु-पक्षियों के झुंड फिरत हैं। अनन्त कोटि जुवान से अनन्त कोटि विध का जिकर करत हैं। प्रिया प्रीतम सुंदर साथका नूर छबि हुस्न की शराब पिए हुए मोहोल-मोहोल मंदिर-मंदिर प्रति बगीचों-बगीचों, गलियों-गलियों, बन-बन, घूमत फिरत हैं और ठौर-ठौर झूमत है। बीच आनन्द मस्ती के सरसार हो के गुंजार शब्द करत हैं और यहाँ अनन्त कोटि खूब खुशाली, सहचरी, सेवक हैं। ये आनन्द रूपा अनन्त सुख की दाता और सब सुख शोभा चातुर्यता को भंडार है।

।। होज कोसरताल।।

आगे मूल कुंड है। तहां से श्री जमुना जी प्रगटी है। सो मूल कुंड से चार लक्ष कोस पूर्व की तरफ चल के नव लक्ष कोस दक्षिण की तरफ चली। तहां चार लक्ष कोस पश्चिम की तरफ चलके रंग भवन से दाहिनी तरफ जो **हौज कोसरताल** है। श्री जमुनाजी उस ताल में जाके समानी। उस ताल की चौसठ हजार मंदिर की गृद एक हीरे की पाल गृदवाय है। एकसये अठाईस पहल है। पहल पहल प्रति एक देहुरी है। और हर देहुरी के दांए-बांए से सीढी उतरी है मध्य में एक टापु है। तिसके ऊपर मोहोल है। और पाल पर चारों तरफ अनगन बन बाग फूले हैं। अनन्त रंगों के बगीचे में अनंत रंगों के पशु पक्षी घुमत हैं। अनंत बिध अतरों की सीतल मंद सुगंधित बहत है। और तीन पालें एक सुंदर हीरे की रोशन है। एक जिमी तरफ की पाल जिमी से कमर भर ऊँची, एक बीच की पाल सो दोनों रोसोंसे भोमभर ऊँची। तीसरी जल की रोस ताकी किनार से जल भरो है सो जल दूध ही समान और दूध से उज्जल मिश्रीसे मीठी-मीठा है। और मानिंद महासिंध के मोजे पर मोजे मारता है। और जल के चबूतरा की किनार लों सुंदर जल मानिंद खीरके लबालब है। जैसे अति उज्जल चांदी का कटोरा किनार लों अति सुंदर दूध से भरा होवें। और गृदवाए पालपर दोरीबंद नंगन की वृक्षन की पांते हैं। पेड मानिंद आरसी के पाक साफ हैं। और अनंत कोट नगन करके जडित है। और अनंत कोट चित्रामन कर संयुक्त

Nijanand App

है। और दस दिस उस पेड के जो चीज है सो पेड में दिखाई देत है। सब पेड में एक पेड और एक पेड में संपूरन पेड झिलमिलात है। और मर्निंद मोहोलात के सहित मेहेराव झंझरी झरोखा के ऊपरा ऊपर पांच खंड बने हैं। सो पांचों खंडों की मोहोलात गृदवाए हैं। जलमाहे झलकत हैं। यह होजकोसर ताल है। खास मोहोल से दाहिनी तरफ है।

।। श्री अक्षरधाम।।

सामने रंग भवनसे नव लाख कोस पर श्री अक्षर ब्रह्म का धाम है। लक्षकोस की चौडाई के बीच में श्री जमुनाजी हैं। श्री जामुनाजी से दोनों महलों तक बीच में चार लक्ष कोस जागा है। तिनमें अनंत कोट रंगन के बन बगीचा है। अनेक रंगन के फूल फूले हैं और अनंत कोट तमासे हो रहे हैं। श्री अक्षर ब्रह्म रात-दिन बाल-लीला करत है । अक्षरातीत पूरन पार ब्रह्म जो मानिन्द सूरज के हैं । तिन सुरज की मानिंद एक किरन के हैं। हुकम श्री अक्षरातीत के से रात-दिन बाल-लीला करत हैं कैसी बाल-लीला करत है ? के जिनके पाव पल नैन फिरन में जैसों यह एक ब्रह्मांड है ऐसे अनंत कोट ब्रह्मांड प्रगट होत है और उसी पाव पल के किंचित नैन फिरन में अपनी-अपनी पूरी आरबलें भुगत के खिपजात है। सो श्री अक्षर की पाउपल में अनंतकोट ब्रह्मांड उपजत खिपत है। तिन में अनंत कोट महाबिस्नु, अनंत कोट बिस्नु और अनंत कोट महासम्भु, अनंत कोट ब्रह्मा और अनंत कोट इन्दादि देवता तेतीस कोट।

राक्षस,मनुष्य, नाग, अनन्त कोट सूर्ज तारागण। अनन्त कोट महद मानसी मैथुनी सृष्टि। अनन्त कोट पिंड ब्रह्मांड महाइंड उपजत खपत है। उनकी पाव पल में यहां कई कोट कल्प बीत जात है ऐसे महासमरथ जो अक्षरब्रह्म हैं सो नित प्रति श्री अक्षरातीत के मुजरे को आवत है। तले आगूं दरवाजे के बीच चांदनी चौक के खडे होत हैं। सुआ मैना मुजरा करावत है। आप श्री अक्षरातीत तीसरे खंड पर बैठके मुजरा लेत हैं। नव लक्ष कोस जागा पाव पल में आवत है। और मुजरा भए पीछे पाउ पल में जात है। और जैसी लीला इत अक्षरातीत की है तैसी लीला उत अक्षर ब्रह्म की है। रंग भवन के आगूं सात घाट हैं, केल,लिवोई,अनार, जाबूं, नारंगी, बट और दक्षिण दिस बट पीपल की चौकी, कुंजवन, कुंज, निकुंज, हौज कौसर, चौबीस हांस की मोहोलाते हैं। जवेरन की नेहेरें, मानिक पहाड, बन की मोहोलाते हैं। और पछिम की दिस विषें फूलबाग, नूरबाग, अन्नबन, दूबदुलीचा, पछिम की चौगान है। और उत्तर दिस विषे लाल चबूतरा, ताडबन, बडोबन, महाबन और पुखराज, बंगला, ताल, कुंड, घाटियां शोभायमान हैं। और सर्व बनों मोहोलों को घेर के चार हार हवेली फिरी है। तिसके परे रांग की मोहोलाइत हैं सो बचन बानी कहवे से बाह्य हैं। जो कई कोट नारायण की आरबलें लेयके अनंत कोट कल्पांत लों बरने तो श्री रांग के मोहोलात के एक हवेली को बरनन ना होवे। और रांग की मोहोलात में अनंत कोट हवेली है। हौज कोसर ताल से नौ लाख कोस के परे एक

Nijanand App

मानिक पहाड है।

।। मानिक पहाड ।।

सो मानिक पहाड कैसा है कि अडतालीस लक्ष कोस की गृद में है। एक महल और अडतालीस लाख कोस ऊंचों है। तिसके एक खंड में बारा-बारा हजार हवेलियन की बारा हजार हारें हैं। सो चौदा करोड चालीस लाख हवेली एक खंड में हैं। इन मोहोलों में ऐसे-ऐसे बारा हजार खंड हैं और तले गर्दवाय इस मोहोल के चौदा करोड चालीस लाख ताल है। ए सब एक ही मानिक में हैं। हे साथ जी! जैसो यह एक मानिक पहाड है श्री रांगकी मोहोलात में जो अनंत कोट हवेलियां है। तिन हवेलियन में अनंत कोट थंभ है तिन थंभन में से एक-एक थंभ मानिक पहाड के समान है। और एक हवेली में कै ब्रह्मांडों समान विस्तार हैं। हर हवेली में कै सूर्ज चंद्रमा तारागण आकाश हैं।

।। अष्ट सागर ।।

अब इस रांगकी मोहोलात में अष्ट दिस विषे अष्ट सागर हैं और दो सागर के बीच-बीच में अष्ट जिमी हैं। और जिमी सागरों के चारों तरफ कोटान कोट हवेली मोहोल मंदिर है सागरों के बीच-बीच कोटान कोट टापूं है, और जिमीके बीच-बीच कोटान कोट बाग बगीचे हैं। ताल, कुंड, बावडी, चेहेबचे, नेहेरें, फुहारें उछलत है। और अनंत रंगन के अनंत कोट हवेली,मोहोल मंदिर है। और जो सागर जिमी जिस रंग की है, सकल जोगवाई भी

उसकी उसी रंग की है, उस ठौर के पांच तत्त्व भी उसी रंग के हैं। या विध सों श्री निजधाम दसहूं दिसा अपरम्पार हैं और बेसुमार बेकिनार है, परंतु बीच ल्यावने दिल सुंदरसाथ के, प्राणनाथ पूरनब्रह्म बे हिसाब को हिसाब में ल्याए हैं,और बेसुमार को सुमार में ल्याए हैं। इस सुपन देह दिल माफक और मध्य निजधाम के जो रंग भवन है ता विषे श्री राज श्री ठकुरानीजी संपूरन प्रियनको लेके अष्ट प्रहर चौंसठ घडी किशोर लीला करत हैं।

।। किशोर लीला ।।

सो किशोर लीला कैसी है कि अमृत से कोट गुनी अत्यंत महा सुंदर मधुर मिठी है। और चौद भवन के जो सृष्टि है तिनकी आतमका बुद्धिरुपी हाथ न पोहोंचने से अछुती है और अनूठी है। परंतु कारन प्रियन के प्रीतम प्यारे प्राणनाथ ने इस सुपन देह जुबां माफक हुकम पूरन पारब्रह्म केसे कोटांश फुरमाया है। सो उस फुरमाये का कोटांश हुकम श्री प्राणनाथ के से यह बंदा कहे चाहत है स केवल आनंद ही की है अष्ट पहर चौसठ घडी सिवाय आनंद के और कुछ नहीं है। दसहूं दिस विषे एक आनंद ही वर्तमान है। बेसुमार अपरम्पार आनंद को आकास है। सीतल, मंद, सुगंध चित्त चाह्या पवन बहत है। आनंद का अगिन, आनंद का जल, आनंद की जिमी सोभायमान है। केवल आनंद के पशु-पक्षी मोहोल मंदिर खूब खुसाली जवेरन की पुतली और संपुरन जोगबाई आनंद ही की है और आनंद में है। और माशूक मीठा आनंद का आनंद में आनंद

Nijanand App

देत हैं। और श्यामा दुलहिन मीठी आनंद की मासूक के आनंद में आनंदित होके आनंद मय मीठी रुहों को साथ मीठे आनंद माशूक के दमादम भिजाती और दिन-रात बूँदे आनंद की बरसाती है। रुहें अति सुन्दर मीठी माशूक की प्यारी, देख-देख मीठे माशूक कमल नैन को और मीठी दुलहिन श्यामा कमल नैनी को बीच शराब हुस्न लाड, दुलहा दुलहिन के रोम-रोम मस्त सरसार होके बारहों हजार एक ही बेर निरत करती है। और दम-दम मीठी निरत कला की गतें भर के आपसे गुजर के नव-नव गुन को नवल-नवल ताने चित्त चाही मारती है। दम-दम छिन-छिन नव-नव रसानन्द के नवल-नवल प्याले लेत हैं। माशूक इश्क शराबी प्यारे मोमिन आशिको को इश्क शराब के मुश्ताक जानके प्याला हुस्न लाड शराबका प्याले पर प्याले देत है। और खूब खुशालियां हक हादी रुहों को अपरम्पार अखंडानन्द को देख के सच्चिदानन्द के आनन्द सिंध में डूब-दूब के मोती, अनन्त गुन माशूख के बाहेर ल्यावती हैं। अनन्त गुननकी अनन्त ताने छिन-छिन नई-नई गावती और बाजे बजाय के निरत कला ल्याय के पाँव, कटि, छाती, हस्त, कंठ, नैन, नासिका, भों भृकुटी मीठी रसना चलाय के जब हक हादी रुहों को रिझावती हैं और अनन्त हुन्नर करके हँसावती है तब आनन्द शान्ति पाती है। पशु-पक्षी बन मोहोल मंदिर साथ दीदार और मेहेर नजर की शराब के ऐसे अलमस्त है कि जहाँ-तहाँ बनों में झूमत-घूमत है। वास्ते सिजदे हक हादी रुहों के फेर-फेर जिमीन को चूमत है और रोम-

रोम मस्त सरसार होके मोहोल-मोहोल, मंदिर-मंदिर प्रति, बाग बगीचे, बन गलियों में गुंजार करत हैं। सर्व सुख दातार पूर्ण पारब्रह्म और हादी रुहों के खूब खुशालियाँ जवेरोंकी पुतलियां, पशु-पक्षी अदि बन मोहोलों में एक-एक पल में कई कोटि गुन-गान करत हैं। तिन गुनन को कोटानकोटि जुबान से रात-दिन गान करत हैं। दिन-रात यही बात जिनके ऐसे पूर्णब्रह्म पूर्णानन्द अक्षरातीत सो आनन्द मोहोल में आठ प्रहर चौंसठ घडी आनन्द लीला करत हैं। अनन्त कोटि काम, रती, लक्ष्मी नारायण की सुंदरताई तें हैं और अमृत ते अनन्त कोटि गूनी मुख विषे मिठाई लिए हुए हैं अनन्त गूनी उजलाई, अरुनाई, गौर-ताई और मुखारविंद में अपरम्पार सफाई चकलाई है। और रोंम- रोंम प्रति पुरन ब्रह्म के अनन्त कोटब्रह्मांड नवलानंद के और नवल चातुर्यता के भरे हैं। और क्षिण-क्षिण पल-पल अनंत कोट गुने बढत है और आप पूरनब्रह्म अपनी नवल रस दुलहिन को क्षिण-क्षिण नवल सुख देत हैं ओर क्षिण-क्षिण नवल-नवल सिनगार करके नवल रस भोगियो को नवल-नवल झांकी दै-दै के प्रियाजी ओर प्रियन को फिर-फिर आनंद सिंध में ढकेल देत हैं। या विध से दुलहा-दुलहिन आठ पहर चौंसठ घडी आनंद रस मोहोल में आनंद लीला करत हैं।

।। आनन्द लीला ।।

सो आनंद लीला कैसी है कि आद अनादि हमेशा हमेस है एक रस वर्तमान है, कबहूँ कोटासां एक खिन की भंग नहीं है। सो

Nijanand App

अनादि अखंड वृत्ति पूरनब्रह्म की जो आठ पहर वर्तमान है। सो पूरनब्रह्म प्राणनाथ के फुरमाए का कोटांसा कहत हूँ। हे सुंदरसाथ जी! रुहें श्री निजधाम की कैसी है कि केवल प्रेम काम ही की मूर्त्ति है। और गुन तत्त्व अंग इन्द्रि पिंड प्रकृति मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार जीव आतम को आदि देके अणु-अणु मात्र सकल जोगवाई केवल प्रेम काम की ही है। प्रिया और प्रियन के पांउ तली तें चोटीलों अंग-अंग विषे अमृत तें मीठे प्रेम काम के सिंध भरे हैं। ओर सूरत जो पूरनब्रह्म मासूक की है सो काम सिंधु की हलाने वाली और हिलुरानें वाली है। अनंतकोट पवन आंधियों केसे मूर्त्ति है,जोई मूर्त्ति दुलहा की दुलही और दुलहिनों के दृष्ट में पडी, सोई काम सिंध हलने लगा। और सहित कोटन मोजों के हिलुरने लगा। और अनंत कोट रसन की और भोग-विलासों की और सब अंगन-अंग मिलाय के रत रसों की तरंगे उठने लगी। ओर रुहें खिन-खिन घडी-घडी सराब हुस्न लाड के से बेहोस हो-हो के फेर-फेर अंग मासूक के से लिपट-लिपट जाती है। और सब अंगन-अंग मिलाती हैं ज्यों-ज्यों सब अंगों-अंग मिलाती है त्यों-त्यों कोटान-कोट गुनी बेकरारी की बृद्धि पाती है। प्रात से ले पहर भर रात लों इस सुख से स्वांत नहीं पाती है। ऊपर पहर रात के बेसुमार और अपरम्पार बेकरारी ल्याती है। तब मासूक रसीले रस की दुलहिनों को रस के मंदिर में आय के रस की सेज पर ल्याए के सब अंगन-अंग मिलाए के तीन प्रहर रति रसानंद सिंध में डुबाए देत है। सो

तीन पहर रति रसानंद सिंध में डूब जाती है। जब रसीक रसीले प्रात: काल को बारा हजार सरुप से एक सरुप होके ऊपर सेज श्यामा महारानी के आते हैं और अनंत रुप से एक रुप दिखाते हैं। और जाहि छिन बारौं हजार की छाती से छाती जुदे करते हैं तब बारौं हजार आप में आती है और आप-आपको जानती और नाम जागृत का पावती है। और जागृत भए पीछे जो प्रान आधार को ऊपर सेज के न देखे तो अति व्याकुल होके और अपार बेकरार होके आप अपने मंदिर से चली। और रस रसानन्द की खफी जो अकह सराब है सो एकांत सब रैन पी-पी के और चित्त चाही अनंत विध की रस कलोलन की न्यामतें एकांत भोग के और कोट अमृत तें मीठे मधरामृत रसके प्याले चूस-चूस के रोम-रोम अलमस्त हैं। और सुरंग सुर्ख हुई है और रस की सेज पर रोम-रोम प्यारे को एकांत मिल के ऐसा बेहद मासूक रस पिया है के पाउतली से चोटीलों प्रत्यक्ष झिलमिलात है। और मानिंद चसमे के भीतरका बाहेर प्रगट दिखात है। और दसों इन्द्रियन से चुचात है सो बाहेर नेहेरें चलती है। या विध से जादू समान सिनगार सब अंगों साज के आप अपने मंदिरों से चल के महा उछरंग उमंग में होके नजीक परवाली रंग मंदिर के आई। परवाली रंग मंदिर के गिरद नूर का जो सुंदर चौक है सो उस चौक में भराय रही। और जीव के जीवन अपना, अन्दर मंदिर के पहिचान के आस-पास परवाली के फिरबली। रति रसानन्द सिंध में डूबे जो दुलहा-दुलहिन हैं सो

Nijanand App

तिनको बाहेर ल्याया चाहती है।

।। उत्थापन ।।

अब ज्यों कर राजकुँवर और राजदुलारी की सहचरी सेवक रस तरंगन से जगाते हैं, योंकर रुहें प्यारी दुलहिन और दुलहा को रति रसानन्द रुपी निद्रा से अनेक रस तरंग से जगाती है। कोई सखी अत्यन्त मीठे ऊँचे स्वरनसे करके रागभैरव को अलापती है। काई सखी मीठी-मीठी तेनन से मीठे दुलहा-दुलहिन के मीठे-मीठे गुन गावती है और गाय-गाय के प्रेमानंद सिंधु में डूब-डूब जाती है। कोई सखी कोटन हुनर कला ल्याए के अमृत तें मीठे बाजे आनंद के बजाउती है और मेह आनंद के बरसाउती है। कोईसखी दुलहा-दुलहिन को जो रस किलोले हैं ताको देख-देख के रोम-रोम उनमत्त हैं। कोई सखी रंग-रंगीले को रंग-रंगीली सेज पर रंग-रंगीले देख-देख के बीच सराब प्रेमानन्द के उनमत्त हो-हो के निर्त करती है। कोई सखी मिश्री से कोट गुनी मीठा रंग रस मासूक आसिक की रंग सेज को देखने के कारन चारों तरफ दरपन रंग कमाडों में झांकती है। और एक दूसरे को पकड-पकड दिखाती है। कोई सखी दुलहा-दुलहिन को सब अंगन-अंग मिलाप परवाली रंग मंदिर को जोर से परिक्रमा करती है ऐसे ही कई विध का परोक्षानन्द लिया।

अब बारौं हजार के हृदयाकास में कई विध के प्रतक्षानंद लेने कीआनंद इच्छा की घटा उमडी और सिर सबों के वास्ते स्पर्श

चारों चरन कमल प्रिया-प्रीतम के आकुले हुए। और नैन सबों के वास्ते देखने जमाल उस नूरजमाल के व्याकुल हुए। और छाती सबों की वास्ते छाती लिपटने नूरजमाल के बेकुल हुई। और भुज सबों की वास्ते अंक भरने लडेतीलाल के फरकने लगी। और आतम अंतस करन सबों के तलफने लगे, तब सर्व सुख दातार और अंतर जामी चैतन्य जो कमाड है सो आपसे खुल गए। संपूर्ण सुंदर साथ ने प्रत्यक्ष दर्शन पाये और प्रथम छाती कुच कंठ नैन निलाट को चरन स्पर्स सुख देके पीछे सब अंग सुफल किए। मासूक के सब अंगों ने मिल जुर के आसिक के सकल अंगों को त्रपत किए। और त्रीजी भोंम चलने की तैयारी होने लगी।

यहां या समें रसिक-रसिले लाल ने संपूरन सिनगार रसीली दुलहीन के अपने हस्त कमलों से समारत है, अपने ही करन से बस्तर पहरनावत है और अपने ही हाथों भूषन पहेनावत है,और अपने ही हाथों तिलक समारत है और सेंदुर मांग में भरत है और अपने ही हाथों दोऊ पटली समारत है और अपने ही हाथों मनमोहन बेनी गूंथत है और अपने ही हाथों सकल सिनगार कराय केमुख में बीडा देत हैं। और दुलहिन दिवानी मासूक दुलहा दिवाने के नोंखे-नोंखे लाड देख-देख के अंगों-अंग भीज-भीझ के और रोम-रोम रीझ-रीख के अपने हाथों से दुलहा अलबेले को समारत है चित चाही अपनी पगडी बांधत हैं तापर कलंगी दुगदुगी धरत है। और अपने ही हाथों चित चाहे बस्तर पेहेनाय के चित चाहे भूषण पेहेनावत

Nijanand App

है। या विध मासूक अलबेले मस्त को सकल सिनगार कराय के अपने हाथों मुख में बीडा देत हैं। और बीच सराब हुस्न खूबी मासूक मत्स के मस्त अलमस्त हो-हो के दोनों मस्त गालों से बोसा मस्त लेती है। और दुलहीन की प्यारी राहदुलारी वास्ते मनमोहन जुगल किशोरी के सिनगार जादू के करती हैं और चितवन में टोना के समान जादू भरी है।

।। झांकी तीसरी भोम से ।।

अब प्रातः काल के समय में हक-हादी मासूक सहित आशिकों के तरफ तीसरे खंड के छज्जे के मुतवजेह मेहेरबान होते हैं। और तीजी भोम की पडसाल को कई विध के नूर-जहूर से रंगते हैं। और कई विध के सुख-सोभा सुंदरताइ से लबालब ओर तलातल करते हैं। आस-पास जो रुहन की फौजें तिनके मध्य किशोर-किशोरी प्रेम रस की बतियां करते-करते कई विध की लटकनी चाल चलते-चलते पांचमी भोम से चौथी भोम में होकर के तीजी भोम की पडसाल पर आए। तीजी भोम की जो पडसाल है ता किनार पर दस थंभ नो मेहेरावें हैं,सो चार इस तरफ और चार उस तरफ मध्य की जो बडी मेहेराब है, बीच उस मेहेराब के प्रिया-प्रीतम जी आए ठाढे भये। और बारौ हजार सखिया संग ही दाए-बाए पीछे आए ठाढी भई। पडसाल जो तीजी भोम की है सो मीठे आनंद सिंधु में भराय रही।

अब जा छीन पूरनब्रह्म मासूक ने ऊपर मेहेराब के लटकत

जो नूर का फूल है ताको हाथ दाए से पकड के और हाथ बाए से कंध श्यामा दुलहिन को टेककें बीच मेहेराब के खडे हुए। और बीक्ष नैनो कमल नैन के भरे जो अमृत की बदलिया है, तीन नैनो से ऊपर तले दाए-बाए सामने तरफ पूरब के हेरे। जोई पसु,पक्षी, बन, बगीचे, मोहोल मंदिरो ने प्रान प्यारे प्रान आधार के दरसन पाए । सोई रोम -रोम आनंदित होके बीच सेजदे के आए और मस्तक को जिमीन से मल-मल के और मुख से जिमी को चूप-चूप के आदाब-बंदगी का बजा ल्याए। आकास अपने नूर से जिमीन को छूता है और पवन दमा-दम कई कोट अतरों की खुसबोए लेके चरन को स्पर्श करता है। और आकास मे भरी जोति है, सो सिर अपना फिर-फिर जिमी से घिस-घिस के फेर-फेर आकास को लगत है। और जल श्री जमुनाजी को जल रोस के मरजाद छोड के ऊपर पाल के आए के सेजदा बंदगी की बजाय के फेर बीच मरजाद अपनी के जाता है। और जिमी रुप जो मोहोल है अन्यन्त नरमीत हो के चांदनी रुपी सिर अपने से फेर-फेर जिमीन को छुवत है, और आदाब बंदगी का वजाते हैं। और खडे से बीच सेजदे के पुस्तखंभ हो के फेर-फेर ज्यो के त्यो सीधे इस्तादे हो जाते है । इस विध से बन-बगीचा सेजदा करत है,और इसी विध से पसु-पक्षी पूरन पार ब्रह्म यथार्थ जान पहेचान के हक बंदगी को बजाय ल्यावते है। और बीच प्रेमानंद के गलित गात हो के दमादम सेजदा बजाते हैं। अनंत बिध की विध्या हुन्नर कल ल्याए के प्रिया-प्रीतम

Nijanand App

सुंदरसाथ को हंसाते हैं और विध-विध से रिझाते हैं। और आसिक मासुक को तरफ अपनी मुतवज्हे देख-देख के वास्ते खेल करने के पसू-पक्षी बीज जोस के आते हैं। जिन विध हक-हादी रूहें बेसुमार हंसे और बेसुमार रीझ जावे सोई-सोई विध्या हुन्नर कला ल्यावते हैं। अनंत कोट ब्रह्माडों की चातुर्यता और हिकमत हुन्नर कला विध्या बल बुद्धि ज्ञान पेहेचान एक-एक रोम-रोम में बसत है। और चिदही चिद में होके मूल चिद को सूत्रधार पर पूरन है। ता द्धारा करके राज ठकुरानीजी सुंदर साथ जो कछु जनाया चाहत हैं सो बिनही कहे मुखार बिन्द के पसू-पक्षी हकीकत सब दिलों की जानत हैं। और हक-हादी के दिल माफक खेल करत हैं, हजारों लाखों पसू-पक्षी लडने वाले लडत हैं कारन मन मोहन माशूक के प्रेम कलोले करते हैं। हजारों लाखों मोरें रोम-रोम उनमत्त होके एक ही ठौर एक ही बार एकइठी नांचते हैं । तिन मोरों के आस-पास हजारों लाखों बंदर दो पाँव से खडे हैं। कई बंदर खमाइचे लिए दो पाँव से खडे होके दोनों हाथों से बजाते हुए हक-हादी रूहों की तरफ कई विध का मुँह मटकात हैं। कई बंदर खमाईचे लिए दो पाँव से होके दोनों हाथों से बजाते हैं और साथ मृंदगों के स्वर मिलाते हैं। कई बंदर मोहोचंग बजाते हैं और मोहोचंग में होके कई विध की तान गाते हुए तान-तान पर बीच में गुलाटें देते हुए कई विध शीश दुलाते हैं और मुँह मटकाके रूहन को हँसाते हैं। जब दुलहिन सहित दुलहा माशूक हँसते हैं तब ही

सलाम(प्रणाम)बजाते हैं। कई बंदर तम्बूरा और कई बंदर करतालें मंजीरा बजाते हैं। कई बंदर रबाब, बीना, सितार, बांसुरी, अलगोजे बजाते हैं और हक-हादी रूहों को हँसाते हैं। सकल कलाओं से सकल बाजे बजाते हैं। कबहूँ बंदर डाँग पर सवार होके आते हैं कि जिन विध से हक-हादी रूहों के दिल में हाँसी नहीं समाती है, उसी विध का सिनगार करके आते हैं। हजारों लाखों बंदर और रीछ सुतरों पर सवार होके कई रंगों के पोसाके जिनके देखे हाँसी आवे ऐसे पहिन के हजारों शुतरों को पूरब से पश्चिम और पश्चिम से पूरब को दौदते हैं और हजारों शुतरों को उत्तर से दक्षिण तथा दक्षिण से उत्तर को दौदते जाते हैं और लाखों सुतर सवार इन सबके आप-पास फिरते हैं। कई हजारों लाखों बंदर दोनों हाथों में लकडी लिए हुए और चोपदारी करते हुए तमाम पशु-पक्षियों को मुजरा कराते हैं। प्रथम सबों को श्री जमुनाजी के भीतर-बाहेर जो पशु-पक्षी है। तिनको माफक मिसल के खडा करते हैं। पीछे अति बडे आदाब से गुन सिफत तजल्ला को बोलते हुए बीच मैदान चाँदनी चौक के ल्याते है। जो पसु-पक्षी जैसा सिरदार है उसका उसी मरातिब से मुजरस करत हैं। जितेक बन-बगीचे पसु-पक्षी आदि उसके तले हैं, तिसका धनी कहीके आगू हक साबूद ठाम सहित नाम बयान करत है। मुजरा भए पीछे फेर उसको बीच सफके खडा कर देत हैं।

उन विध से सकल पसु-पक्षीयों का मुजरा लेत हैं। कबहूँ हजारो लाखो बंदर बागे पहिन के और टोपीयाँ देके, फेटा कम्मर से

Nijanand App

बांध के छडीयाँ हाथो मे लेके बीच चौक चाँदनी के बेसुमार, अपरम्पार और बेखुद उनमत्त होके बीच हाल नूरजमाल के नाचते हुए हक–हादी रुहो को हँसाते है। कई बंदर बकरे के सवार होके मुजरा करत है। कई बंदर ऊपर घोडो के सवार होके बीच मैदान चौक चाँदनी के आडे टेढे सीधे कोड देते हैं। कदी ऊपर मस्तक हस्थियों को हूलते हैं और हस्तियों से हस्ति लडाते हैं। कहूँ घोडों को नचाते हैं। कहूँ सिंहों से सिंह, हाथी से हाथी, घोडे से घोडे, शेरो से शेर, रींछो से रींछ, मेढो से मेढे, बीको सेबीक, बांदरो से बांदर, पसुओ से पसु, पक्षीओ से पक्षी, साथ निज–निज जोनों (योनियों) के आनंद रस में भीज–भीज के रस किलोलें करत हैं। कदी निज–निज जोनों से बरजीद जे जोने है तिन जोनों से उमड–उमड और घुमड–घुमड के लडते हैं। कहूँ हजारों लाखों बंदर अंत्रिक्ष निराधार आकास में गुलाटें लेते हैं और गुलाटों–गुलाटों आकास से उतरके जिमी पर खडे होके नुजरा बजाते हैं। कहूँ हजारों लाखों कोटों कबूतर अपनी गत दिखाते हैं। और सुआ मैना मीठी–मीठी प्रेम रस की सुंदर बतियां कहके कइ विध का सुख देत हैं । और पक्षी नवल–नवल नाम लेके पुकारते हैं। कइ हजारों लाखों बंदर नक्कारें और नोबतें बजाते हैं। कई हजारों लाखों बंदर तुरई और करनाल को बजाते हैं। कई हजारों लाखों रींछों के झुंड आगूं अरस बीच चांदनी चौक के दोनो हाथो से तालीयां दे–दे और फिरकी ले–ले तता थेई–थेई नांचते है। और नाच–नाच के आडी

टेढी गुलाटियां लेते हैं। और गुलाटियां दे–दे के आगूं अक्षरातीत के मुजरा बजाते हैं। और रोम–रोम मग्न हो जाते है। और कहूँ बंदर नट डोरी नूर की लेके लाल हरे वृक्षों से जो बीच चांदनी चौक के हैं बरत बाजते है। और सुंदर हेम कंचन चांदी नूर के गट तले से उपर को उतरते–उतरते उपर सिर अपने के रखके उपर बरत कर चढते हैं और दोनों हाथों से घटों को पकडे हैं और दोनों पांउ से उपर डोरी के चलते है। और नजर श्री राज सों बांधे हैं। जब मध्य डोरी के सामे श्री राज के पोहोंचते हैं तब डोरी और कमर अपनी को बेसुमार हिलाते हैं सहित डोरी के झूलते हैं। और श्री राज श्री ठकुरानीजी को और संपूरन साथ को बेसुमार हँसाते है और विध–विध से रिझाते हैं। सैकरन हजारन बंदर पोषाकें पेहेरे हुए घट सिर पर धरे हुए हरे वृक्ष से चलके लाल वृक्षपे हो उतर के आगूं अक्षरातीत के जाय के जिमीन खिजमत की चूमते है और कदी रीक्षण की कतारे चढती है और दूसरे वृक्षों पे हो उत्तर के आगूं अक्षरातीत के जाके सेजदा बजाते हैं। और कदी बीच–बीच रीछ बीच–बीच बंदर चढते है और दूसरे वृक्षपे हो उतर के आगूं मासूक के जाके सिर और नाक के तांई फेर–फेर जिमीन से मलते और देख–देख अदभुत तमासे इनके हक–हादी रुहें हँस–हँस के फेर–फेर हँसते हैं। और आगूं पूरन ब्रह्म के अक्षरातीत के कोई कूदते हैं, कोई फांसते हैं, कोई दौडते हैं, कोई लडते हैं, कोई भीडते हैं, कोई भगते हैं,कोई पीछुं उनके पडते हैं,कोई अनंत कोटि विध से गाते हैं,कोई अनंत

Nijanand App

कोट विध से बजाते हैं,कोई तले से उपर को चढते हैं,कोई उपर से तले उतरते हैं, कोई छिन–छिन पल–पल में नई–नई बोलियां बोलते हैं, कोई चाल सबों की चलते हैं, कोई मग्न हो–हो के कई विध का निर्त करते हैं। कोई संपूरन पसु–पक्षीयों की बोल–चाल की नकल करते हैं।

या विध से श्री राज श्री ठकुरानीजी ऊपर तीसरी भोम की पडसाल के दो घडी वितीत करते हैं, पीछे दो घडी के संपूरन पसु–पक्षी बन–बगीचे मोहोल मंदिरों को बीच मेहेर नजर अमृत रस सिंध के भींजाय–भींजाय डुबाय–डुबाय के तरफ चार मंदिर की देहेलान के श्री राज श्री ठकुरानीजी सहित समस्त सुंदरसाथ के मुतवज्हे हुए।

।। प्रातः काल का सिनगार ।।

अब तिन घडी दिन चढते श्री राज बीच चार मंदिर की देहेलान के और श्री ठकुरानीजी दूसरी हार में पहिलो जो आसमान रंग–मंदिर है ता विषे सहित सुंदरसाथ के प्राप्त भई। चार सखी श्री राजजी को सिनगार करावती है और चार सखी श्री श्यामाजी दुलहिन को सिनगार करावती है। और कोई सखी अदभुत जुगत की पागडी चित चोर रंग की सर्व मोहन बांधती हैं, और पेंच चित चोर जादु भरे फेरती हैं, तिन पर कंचन रंग की दुगदुगी बांधती है। दुगदुगी में जेते रंग के नंग जडे हैं, बीच समों सबों के तेतेही रंग की बीजुलियां चमकती है। और कलंगी परन की हीरा–लाल मोतीयों की जडी हुई

ऊपर पाग के धरी है, सो मानो कोटान कोट सूर्ज एक ही बेर उगे हैं। और श्रवनों विषे करन फूल धारन किए हैं। सो दोनों जल स्थलों पर लटकत हैं सो जैसे कोट बीजुली के झुंड एक ही बेर चमक जाय । और श्रवन पर मोती चढे हैं और गृदलाए नंगन करके जडे हैं। जैसे एक ही सूर्ज मंडल तें अनंत कोट किरने गोलक्रत चलें और उपर श्रवनों के दोनो तरफ दो झुमक मोतीयों के लटकत हैं सो बीच बत्तियों मासूक के झुलत हैं। और बारो हजार रुहन को बीच हिंडोले बेकरारी के झुलाते हैं और नासिका में बुलाक पेहेरी हैं सो दमादम ऊपर अधुरों के डोलत है, सो डोलती नहीं है यह तमाम आसिकों की कतल बोलती है। थोरे से आसिकों की श्री राज विनती करते हैं सो सिर डुलाती हैं के मैं नहीं मानती हों मैं तो तमामों का कतल करुँगी । अति उज्जल सफेद रंग का बागा पेहेना है मानों दूध सफेद नूर जोति का सागर जिमी से आसमान लों भराय रहो है। जैसे इत जल महाप्रलय को एकाकार हो जात है ऐसे नूर जोति रुपी जो बागे की रोशनी है सो जिमी से आसमान लो मानिंद रोसन जल दूध के भराय रहो है। सो जैसे गेहेरे जल विषे मछली फिरती है ऐसे रात–दिन चौंसठ घडी रुहें बीच उस रोसन जल के फिरती है और चोली बदन को लिपट रही है दामन चीन से कुसादे हुए हैं सो ऐसा भासत है के बुलाक, करनफूल, झूमक ने ऊपर आसिकों के बोला जो कतल है, और ल्याए जो हमला है सो जामे नें आधे अंग से मासूक को पकड के मासूक से खूब लिपट–लिपट के और आधा अंग

Nijanand App

अपना कुसादे किया है वास्ते पनाह रुहों के केहता है के हे मोमिन जी! जो बचना अपना चाहो तो तले मेरे आओ। और हीरा-मानिक मोती निलबी लसनियां के पांच हार पेहेने हैं, सो पांचो हारों ने अपने रंग से आसमान और जिमीन के तांई रंग लिया है। जिस हार की तरफ हेर के फेर आसमान जिमी को देखे तो उसी हार के रंग से रंगा हुआ भासत है। जब ऊपर से तले लो देखत आवे तब जुदे-जुदे पांचों रंग पावे और पांचों हारों से कोटान-कोट रंगों की कोटन-कोट किरनें उठती है, सो गोलाकृत हार कतार बंधी है। गृदवाए मुखारविंद के और तले लटकट जो दुगदुगी है सो योंकर भासत है जैसे सेनाके पीछे महा शुरवीर खडे होवे। वास्ते चौकी दृष्ट चित रुहों के तरफ मुखारविंद के न जावे। और नैना नासिका श्रवन गाल अधुरा दंतन की जो किरनें हैं सो संपूरन किरनन को चीर चली है सो ऐसी भासत है के वास्ते बुलावनें दृष्ट रुहों के नैन, नासिका, श्रवन, गाल, अधुर, दंतों ने जानो महाशाह राह सडक बंधी है। हाथों में मुदरी, कडे, पोहोंची, बाजूबंध पेहेरे है। और बाजूबंधों में दोनों तरफ चार-चार झवियाँ लटकती और हलती है, सो ऐसो भासत है के लटकती हलती नहीं है ए वास्ते कतल मोमिनों के नांचती और कूदती है। ज्यों-ज्यों हक मुंदरी और अंगुरी हलवन-चलवन करते हैं तो यों भासत है के मोमिनों को तरफ अपनी बुलावते हैं और विध-विध से निसा (खातर) करते हैं। आसमानी रंग पिछोरी कमर पर विराजमान है तापर नीलोने पीलो बीच के रंग

को पटुका सोभायमान है । सो ऐसा भासत है जैसे श्याम रंग घटा में नीली-पीली बिजली चमके और पग में नीली इजार है तापर सफेद रंग दामन सोभायमान है। सो कैसा भासत है जैसे नीले आसमान पर सफेद रंग की घटा छाय जाय और तले से नील की झांई झलकार दिखाय ऐसे झांई नीली इंजार की ऊपर दामन सुपेत के झलकत है। और भूषन चार झांझरी, घूंघरी, कांबी, कडुली बीच चरन कमल के झलकत है तिनके अनंत कोट सूर्यों के समान प्रकाश है। और एक-एक नंग कोटि-कोटि बीजुली समान को जोत धरत है। इन विध का नख-नख सिनगार करके उपर सिंहासन के विराजमान भए ।

।। पहला सिनगार श्यामाजी का ।।

अब चार सखी ने अति महा रुचि सों श्री श्यामाजी को नख-सिख सिनगार कराय के बीच जिस सिनगार के कि मासूक बेकल बेकरार हो वे सब वेहि सिनगार कराए। हर सिनगार में जादु टोना मिलाये और सिवाय अनवट बिछियों के सिनगार श्यामाजी के श्री राज के बराबर आए। नीली लाह को चरनियां, श्याम जडाव कंचुकी, बाजुबंध, पांचोंहार, पांचलडी, चंपकली, कंठसरी, चीड नथ बेसर लोलकझाल,पानडी, वेंदा बदिया बीज सिसफूल, बेनीफूल, चोटीफूल, फूमकाहारों और नाडे के ए संपूरन सिनगार श्री श्यामाजी को चार सखी ने कराए। और आप बारौं हजार साथ ने सिनगार मिनों मिने करे उनने उनको उननें उनकों।

Nijanand App

अब श्री श्यामा दुलहिन नख सिख सिनगार करके और संपूरन सुंदरसाथ को कराय के वास्ते मासूक जितने के फोज रस की लेकें तरफ मासूक के चली। श्यामा महारानी बीच मेदानी प्रेम काम के खीली जैसे मतंग मतवारी हाथी निसान को आगे होवें और पीछे उसके छावला चलें जैसे मस्त नवजोवन हँसिनी को मस्त छौना हंसन के घेर चले ऐसे चन्द्रवदन मृगलोचनी घेर चली और आस-पास प्रिया जी महाराज के सोभायमान भई। और प्रितम है स्वाधीन जाके ऐसी जो श्यामा महारानी है तिनको सिर अपने के देख के अनेक विध का घमंड करती है और अनेक विभ के प्रेम रस का मान-गुमान अहंकार रखती है। प्रेम काम सिंध की तरंगन से उमडाती ऐंडाती है। उनमाद नव जोवन के से छिन-छिन पल-पल इठकाती-ठिठलाती और बीच हजूर मासूक के चली जाती है। कोई सखी हस्तों में छडियां लिए हैं, कोई फूल कमल को लिए हैं, कोई रूमाल पान डब्बे या विध से बारा हजार अपनी-अपनी जुदी-जुदी बारा हजार सेवा लिए हैं और आगूं कमल नयनी के कोउ गावती है, कोउ बजावती है, कोई नाचती है, कोई कूदती है, कोई फांदती है, कोई दौडती है, कोई भमरी फिरती है, कोई मानिंद नटके गुलाटियां देती है, कोई कोनियां रमती है, कोई फूंदडी फरती है, कोई लडती है, कोई भिडती है, कोई देख-देख के अट्टहास हंसती है, कोई सखी श्यामा महारानीजी की चोपदारी करती है, कोई ऊपर छत्र ताने है, कोई आगे राह के बिछोनें बिछावती है, कोई अतरदानी तो कोई

पीकदानी, कोई बस्तर कोई भूषन लिए है, कोई सखी फूलन की वर्षा करती है। या विध श्यामा महारानी अलमस्त दिवानी नजीक मासूक दिल जानी के आई। प्रानन के प्यारे ने राजदुलारे ने प्रान के प्यारी को राजदुलारी को जा छिन देखी ताहि छिन मानिंद गुलाब फूल कमल के सब अंग खिल गए। और नख-सिख भीज के रोम-रोम रीझ के सिंहासन से उठ के पांच कदम चल के दोनों करकिमल श्यामा वनरी के चतुर वनरे ने पकड के मसकत अंक भर के पेदरपें मुतवातर अधुर अमृत पीके बायें अंग सिंहासन पर बैठारो। और सुंदरसाथ जो संगहतो ताको मेहेर नजरमें भिजाया और आनंद सिंध में डूबाया सबने चित चाह्या मनोरथ पाया।

।। बाल भोग।।

बीच ऐसे अवसर के लाडबाई आगूं जुगल किशोर के आई और अरज कुंवर कलेऊ की ल्याई। राज श्यामाजी ने अग्याकारी लाडबाई सकल समाज अपने लेके राज श्यामाजी के चित चाहे सकल पकवान ले आई, कई कोट विध के काचे पकवान और कई कोट विध की मिठाईयां और कई कोट विध के पाके पकवान और कई कोट विध के कंदमूल, फल-फूल बेलपात और कई कोट विध के अथाने आद अनाद के अघट अटूट अनंत अपार नंगन के अनंत अपार वासनों में बने बनाए सध्य वफहात ताते हर भोम मे लबालब है और तैयार मौजूद है, सखी बारा हजार एक ही बासन में से एक ही जिनस भर लेती है, उस बासन में वही जिनस जैसी

Nijanand App

की तैसी किनार से लबालब है। और इन रुहों ने चित चाह्या अपने भरही लिया और कै कोट विध के रस है और कई कोट विध के भोग है सो दुलहा दुलहिन ने चित चाहे पाए। पीछे समस्त साथ ने चित चाहे पाए प्रसाद फेर जुगल सरूप जुगल बीडा आरोग के और बारा हजार बीडा, बारा हजार सुंदरसाथ को बक्स के अत्यंत मीठी लटकनी चाल से बीच गले दुलहिन प्यारी के गलबहियां डाल के निर्तकी गतें भरते-भरते तानन पर पाव धरते-धरते बीच नीले-पीले मंदिर मे दाखिल हुए और छाजे चांदनी चौक को पीठ देके मंदिर की मेहेराब के सन्मुख होके बीच झरोखे के ऊपर सिंहासन पे विराजमान हुए।

।। तीसरी भोम में निरत ।।

आगे नवरंगबाई निर्त करने लगी तिन सब सखियां पाछे नवरंगबाई के गावने बजावनें लगी। कोई सखी मृदंग को बजावती है, कोई सखी खमाइचे बजावती है, कोई बीना रबाब बजावती है कोई बेन सहनाई फूकती है, कोई करताल मंजीरें गिड-गिडौ बजावती है, कोई जलतरंग,कोई श्री मंडल को बजावती है, और भी अनेक बाजे बजाती है और भी अनंत बाजे हैं। सो जोन छिन पल को जो राग तान है सो खिन पल-पल आठ पहर चौंसठ घडी बिना ही बजाय बाजत है। अनंत कोट तानें गाते हैं।

अब बीच नीले पीले मंदिर के मंडल निर्तका बंधा। तीनसय सखी के स्वर श्री नवरंगबाई के स्वर में मिले और बाजों के स्वर एक

सूत्र भए और भूषनों के स्वर एक में एक हुए। कोटी मृदंग, खंमाच, बीना, रबाब, सितारें, बेन, सहनाई, कठताल, मंजीर, जलतरंग श्री मंडल डोरू आपूस में मिल गई। कई कोट बजे मिल के एक बाजा हुए । ऐसे कोटान कोट बाजे जुदे-जुदे तिन सबों के स्वर एक सूत्र होके श्री नवरंगबाई के स्वर में मिल गए। अनंत कोट बाजों और भूषनों कई कोटों जवेरों की पुतलियों के ताल स्वर राग तान एक भई, ताल, स्वर, राग, तान, का एक मंडल बंध रहा। और दसहूं दिसन विषें महा सुंदर अमृततें महामीठे डोर स्वरन के खींच रहे और दसहूं दिसन के विषें सुधारस बरस रहो और कीच अमृत की मच रही। बीच आसमान जिमीन के प्रेम रस महा आनंद को एक सुधा सिंधु मचक रहो,तता थेई-थेई हो रही। श्री राज श्री ठकुरामीजी मग्न हो रहे हैं, सुंदरसाथ सकल मगनहो रहें। जवेरों की पुतलियां मग्न भई हैं सो तनको बिसर के निर्त करती है। और हवेलियां, मोहोल, मन्दिर दर दिवाल, थंभ, झंझरी, झरोखा, चौक, चबूतरे मग्न हुए। आसमान, जिमी, जल, अगिन, पवन मग्न भए। पशु पक्षी बन बगीचे मग्न हुए, सो आपको भूल के मासूक के अनंत गुन छबि समुद्र में डूबे रहे। दरम्यान एते के श्री अक्षर ब्रह्म पाव पल में नौ लाख कोस जिमीन लांघ के वास्ते मूजरे मासूक के बीच चांदनी चौक के आए। सुआ,मैना,चोपदारी करी। तब पूरन पारब्रह्म अक्षरातीत तरफ चांदनी चौक के फेरे। अक्षरब्रह्म ने मुजरा बजाया और मुखारबिंद का दरसन पाया। फेर उसी पल में अपने घर आए।

Nijanand App

कैसे हैं श्री अक्षरब्रह्म के जिनकी किंचित नेत्र भ्रमन में अनंत कोट ब्रह्माड अपनी-अपनी पूरी आरबलें भुगत के उपज के खप जात है। और उनकी पावपल पूरी नाही होत है । रातदिन चौंसठ घडी एही लीला करबो करत है। खेल की सूरत से और दूसरी विलास की सूरत से रातदिन चौंसठ घडी श्री राज श्री ठकुरानीजी के ध्यान में मग्न रहत है।

।। दूसरे प्रहर को भोजन लीला ।।

अब पांच घडी दिन चढते जे सखी बनकों गई थी ते प्रहर भरे दिन चढते भवन में आई, साक, पान मेवा चित चाहे ल्याई और उसी चार घडी के मांहे मन मोकले खेल करके और श्री राज श्री ठकुरानीजी को नखसिख सिनगार फूलन के बनाय के पहिराये। पहर दिन चढते छाती अधुर नेंन निलाट को कदम मासूक के से मल के तीनसय सखी श्री लाडबाई के झूंड की वास्ते रसोई खासलखास तीसरे खंड से तले के खंड में उतरी। चार घडी के अंतरगत अनंत कोट विध की रसोई तैयार करी। तिस रसोई बनाने में केवल चित चलाया हाथ पाउं अंग एक ही न डुलाया और अनंत प्रकार के भोग चित चाह्या बनाया। काहू सखी ने बीच दो घडी के अत रूच बारा हजार और दो बीडिया लगाई और बीच छाबले धर के ऊपर चौकी के रखी। फूलन के सिनगार कराय के ऊपर श्री राज श्री ठकुरानीजी के बरषा फूलन की बरसाई । नवल किशोरी को नवल सिनगार काराय के और नवल झांकी पाय के नवल रस

की लूट पाट मचाई। कोई सखी बीच खुसबोए के मासूक के मस्त होकर मानिंद भ्रमर के गुंजार सब्द करत है। कोई सखी बीच सब्द मासूक के मोहित होके मानिंद मृग के बेहाल खडी है। कोई सखी बीच हुस्न मासूक के गर्क होके मानिंद पतंग के और मानिंद चकोर के एक टक हेरती है। कोई सखी कामाग्नि से बेकरार होके कुच अपने को चरनों से स्पर्स करती है। कोई सखी बीच अथाह मुख जीति जल के मानिंद मछली के अलमस्त फिरती है। कोई सखी नैंन रस फूल पीके मानिंद मतवारों के घूमती है। कोई सखी दोनों गाल लाल मासूक के से लाल-लाल सराब पीके लाल गुलाल हुई। सखी अधुरामृत रस पीके मानिंद हस्ती मतंग मतवार के जहां तहां झूंमत है। कोई सखी रोम-रोम रीझ के और नखसिका भीज के सनमुख मासूक के आय के चित चाही तान मारती है और मेंह प्रेमरस को बरसा के दुलहा दुलहिन को बीच प्रेमानंद के भिजाती है। कोई सखी रात को ऊपर सेज को गुजरो जो माजरा है तिसकी रमूज करती है। कोई सखी बडे-बडे नैंन से घूंघट में बडे-बडे नैंन को देखती है। कोई सखी घूंघट में हो मुसक्यात है। कोई सखी ऊपर जुगल किशोरी कों अपने हाथों खिलाती है। कोई सखी पीकदानी में पीक लेती है। कोई बातें श्री राज सों करती है। कोई तन मन चित देके बातें श्री राज की सुनती है। कोई आउती है कोई जाती है। कोई उठती है कोई बैठती है कोई हंसती है कोई खेलती है, कोई बैठी है, कोई ठाढी है। या बिध से आठ पहर चौंसठ घडी

Nijanand App

केवल प्रेम आनंद ही की झर लगी है। और संपूरन सुंदरसाथ आठ पहर चौंसठ घडी केवल प्रेम आनंद ही में भीजे फिरती है। आठ पहर चौंसठ घडी जितेक काम श्री राज श्री ठकुरानीजी के करते हैं। तिन संपूरन कामन में बीच दिल रूहन के घटा आनंद की उमडती है।

अब दरम्यान एते के पौन दो पोहोर दिन चढते लाडबाई ने आए के विनती करी के जो आग्या प्रान प्यारे की पाऊं तो तास में रसोई ल्याऊं। तब प्रान आधार प्रान प्यारे ने आग्या लाडबाई को दई के सिताब ल्याओ। तब एक सखी ने चौकी श्री राज के आगे धरी, दूसरी ने चाकला बिछायी। श्री राज श्री ठकुरानीजी ने आरोगन के बस्तर पेहेन के और नूर के जल से हाथ पाऊं मुखारविंद पखाल के वास्ते आरोगननें के दोऊ जुगल किशोरी ऊपर चाकले के आए। तब बारौं हजार ऊपर परसने के मुस्तैद हुई। अनंत कोट भोग आरोगावने को बारौं हजारा बीच जोस के आई। रोम-रोम से आनंद सिंध में उमडे और बीच प्रेमानंद के मग्न होके वजूद अपने को भूल के बीच हाल मस्ती के दौडती-फिरती है। तले की भोम में जो रसोई की हवेली है बीच उसके आउत भई।

।। रसोई की हवेली ।।

कैसी है रसोई की हवेली कि जिसमें बीस-बीस मंदिर चारहूं दिसन विषें विराजते है। और एक हार थंभों की मंदिरों की बाहिरी तरफ है और एक हार भीतरी तरफ है और कमर भर

ऊंचोजो बीच में चबूतरा है एक हार थंभन की चबूतरा की किनार पर है। और भी अनंत जुगतें बनी है सो उत्तर की दिवाल में जो बीस मंदिर है तिन मंदिरों में से चलके ईसान कोन से तीसरो जो मंदिर है तिन में खास रसोई होत है तिसमें सखियां आय ठाढी भई जो दसहूं दिसन विषे नजर करें तो अनंत कोट अगनित सामग्री धरी है। और अनंत कोट विध के अत्यंत बुलंद और छोटे जो बासन हैं सो अनंत कोट जिनसे जो जिनस जिन बासन में चाहिए सो वस्तु उसी बासन में किनार में लबालब है। और हमेसा हमेस अघट (अटूट) अखंड भरपूर है। अनंत कोट विध की मिठाई जुदी-जुदी धरी है। तिनमें से एक मिठाई अनंत कोट विध की अनंत कोट मेवों में अनंत कोट विध का स्वाद हैं। तिन सकल स्वदों की एक-एक जिनस है और अनंत कोट जिनस की मिठाई है सो मिठाई अनंत कोट विध की है। अनंत कोट बासनों में किनार में लबालब है और ज्योंकर ततखिन बनाय के धरिए। इन विध से ताते वफहात है और अनंत कोट विध के पके पकवान धरे हैं। और अनंत कोट विध के कचे पकवान कोट रस व्यंजन है। अनंत कोट मेवे पके और गादर अमृत तें मीठी सोभायमान है सो अनंत कोट मेवे अनंत स्वाद अपना जुदा-जुदा रखते हैं। फेर एक मेवे का स्वाद अनंत कोट मेवे में और अनंत कोट मेवे का स्वाद एक मेवा रखता है।

ऐसे अनंत कोट मेवे चित्त के खेंचने वाले अनंत कोट बासनों में धरे हैं। अनंत कोट मेवों के अनंत कोट विध के अनंत

Nijanand App

कोट अथानें बने हैं सो अनंत कोट स्वाद अपना जुदा-जुदा रखते हैं। जिन मेवे के साथ जौन मसाला अत्यंत स्वाद देवे सो माफक दिल श्री हक हादी रूहों के उस मेवे में वही मसाला भरा है, या विध के अनंत कोट अथानें हैं। और कई विध के दूध-दधी माखन-मलाई है और कई विध के रस हैं सो सुरज समान रोसन है। ऐसी जो अनंत कोट नंग धात हैं। तिन धातों के बासन बने हैं। तिन बासनों में बिजुलियों के नंग जडे हैं। ऐसे जो अनंत कोट बासन हैं ते दूध-दधी माखन-मलाई और अनंत कोट रसों से भरे हुए ऊपर सीकियों के धरे हैं। जाछिन जो सखी कुछ चाह करके चितई सो ततखिन पसर के ऊपर जिमीन के आए बैठे। बारहों हजार ने एक ही बार मनमुकता भर लिया आप ज्यों के त्यों किनार से लबालब है जोई इच्छा बारौं हजार की पूरन भई सोई ज्यों के त्यों जहां के तहां जात रहे और तले लदाऊ के ज्यों के त्यों लटकने लगे। कई विध की सोभा लेने लगे।

या विध से बारों हजार नूर की जो रूहें हैं सो नूर की बासनों में नूर की सामग्रियां आगूं नूरतजल्ला के ल्याउती हैं। और महा आनंद को पाउती है और बीच-बीच में अनंत कोट तमासे करती है। कोई सखी जेंवत जो दुलहा-दुलहिन है तिनको गलियां गाउती हैं। कोई सखी थाल मिठाईयों के लिए हैं और कोई थाल पकवानों से भरे हैं। कोई सखी कई विध के रस व्यंजन काचे लिए हैं। कोई सखी अमृत तें मीठे और पक्के गादर अत्यंत महा सुंदर मेवे लिए हैं

और कोई सखी अथानें लिए हैं। कोई सखी दूध-दधी माखन-मलाई के लिए हैं और सकल पदारथ (सामग्री) बीच हाथ श्री राज श्री ठकुरानीजी के फेर-फेर परसत हैं। श्री राज श्री ठकुरानीजी फेर-फेर मने करत हैं सखियां अत्यंत प्रेम मग्न होके मने करते-करते फिर परसती हैं। हजारन सखी हजारन विध की जिनसें लेके ऊपर श्री राज श्री ठकुरानीजी के लाड-प्यार करती है, तब श्री राज श्री ठकुरानीजी सबको मन राखत है और सकल सामग्री पाउत हैं। हजारन सखी बैठी-बैठी श्री राज श्री ठकुरानीजी की भोजन छबि देखती हैं और मुखाविंद को विलोकती हैं। हजारन सखी मेवा मिठाईयों के थाल भरे हुए खडी हैं। हजारन सखी हजारन सामग्री परसत जात हैं और हजारन सखी परस-परस के तले की भोंम को चली जाती है। हजारन सखी विध-विध की सामग्री भर-भर के तले की भोंम से बीच नीले-पीले मंदिर के आती है। हजारन सखी तले की भोंम से हजारन सामग्री लिए हुए ऊपर को आती है। तिनके हाथों में से छीन के सितावतर आगूं श्री राज श्री ठकुरानीजी के आन धरती है। या विध से अनंत विध की प्रेम लीला करती हैं।

।। आचमन बीडा ।।

अब प्रीतम आरोगते कई कोट सुख देत हैं, पीछे आचमन करत है। कई हजारन सखी दूध-दधी से उज्जल मिश्री से मीठे जल की हजारन रंग की हजारन झारी लिए खडी है। एक सखी आचमन करावत हैं जोई जुगल किशोरी आचमन करके उठे सोई हजारन

Nijanand App

सखी हजारन तरफ से रूमाल पान-डब्बे बीडियां लेके दौडी। श्रीराज श्री ठकुरानीजी ने दो बीडा दोनों मुखारबिंदों में आरोगी मधुर-मधुर रस मुरावत जात हैं मैर मंद मुसक्यात हैं। ज्यों-ज्यों बीडा मोरत है त्यों-त्यों लालक तंबोल की लालीमी फेलात है। और प्रीतम प्यारे बीच-बीच में रमूच इस्क की कहि जात है। तिस पीछे आग्या भई के बारौं हजार प्रसाद पाय आओ, तब पूरन समस्त सुंदरसाथ आग्या मासूक की पाय के वास्ते आरोगने के एकठी तले के भोम में जाय के बीच हवेली रसोई के आय के बारौं हजार की एक ही पगंत बैठी। जो सुख के अगम अकह है सो सबों ने बीच भोग एकांत के लिया। और चित का चाहा विनोंद हांस किया। पीछे आचमन करके तीसरी भोम आए के सबों ने चरन कमल मासूक के चूमे। तिस पीछे हक-हादी मासूक ने बारा हजार रूहों को बारा हजार बोडा बक्सी और मुख कमल चूंम-चूंम के खेलने की आग्या दई। और आप चंद्रवदनी को लेके बीच नीले-पीले मंदिर के ऊपर रंग सेज के दोऊ रंग-रंगीले पौढे। और वास्ते खेलने के समस्त सुंदरसाथ बीच बगीचा मोहोल मंदिरों के पधारो। और चित चाहा अनंत विध का खेल करन लगीं। कोई सखी रंग भवन के छज्जों-छज्जों फिरती है। कोई सखी निपट ऊंचे चांदनी पर चढती है। कोऊ सखी निपट झरोखों जाय बैठी है। कोऊ सखी परिक्रमा करती फिरती है । कोई सखी चित्रामन दिवालों के देखती है। कोई ऊपर चांदनी के चढ के बन को पेखती है। कोई बाहिर निकस के

बन में धस के ऊपर घोडे के चढती हैं और बीच रंग मस्ती मासूक के छक्के लाखों कोसों तक दौडावती चली जाती है। कोई पवन से तेज अति महा सुंदर जो हस्ती है तिनको दौडावती है कोई घोडों से घोडें लडावती हैं। कोई हाथियों पर हाथी झुकावती हैं। कोई घोडों और हाथियों को बराबर दौडावती हैं। कोई घोडों के पीछे हाथियों को लडावती हैं कोई घोडों के ऊपर मस्तक हाथी के चढावती हैं। कोई झूंडों-झुंड मिल के ऊपर रथ हस्थियों के बैठती है। कोई जोडे-जोडे ऊपर घोडों के चढती हैं। कोई बन-बन परिक्रमा करती है। कोई सेरों पर बैठती हैं, कोई सिंहों के सवारी करती हैं कोई मृग मेढें रोझ बैल-बकरों के रथों पर बैठती हैं। कोई रंग भवन को परिक्रमा करती फिरती है। कोई सखी मोरों को नचाऊती है, और बंदरों पर बाजें बजावती हैं और आप बांसुरी बजावती है। कोई सखी राग गावती हैं और निज करसें बीना बजाउती है और मृग कस्तुरियों को भुलावती है। मोहोल मंदिर बन-बगीचे पशु-पक्षियों को बीच रस रंग के छकाउती है। कोई सखी बीच लाड-प्यार हुस्न मासूक के उनमत्त होके कोट कला निर्तकी ल्याय के गत-मत बिसार के अपरम्पार नांचती है। कोई सखी ऊपर हिंडोलों के बैठ के चित-चाह्या हींचती हैं। कोई सखी जिमीन पर झलूबी जो वृक्षन की डालें हैं तिनको पकड के झूलती है। जिमीन से आसमान पर और आसमान से जिमी पर संग डाल के आती जाती है। और एक सखी मानिंद बंदर के डाल से ऊपर डाल के जाती है और बीच में

Nijanand App

गुलाटें खा जाती है और एकें सखी जिमीन से डाल को पकड के ऊपराऊपर डालों-डालों चढके ऊपर चांदनी के जाती है। एके सखी चांदनी से डालों-डालों गुलाटियों उतरती है और गुलाटियों पहेली डाल से ऊपर जिमी के आय खडी होती हैं। एक सखी डालों-डालों और पातों-पातों फिरती हैं। एके सखी एक डाल पर चढके दूसरी डाल हाथ से पकड के मानिंद बंदर के हाथ से हिलातो है। एके सखी ऊपर डालों के पीछे बंदर-लंगूरों के ऊपर ठेक उनों के ठेक देती है और गुलांट ऊपर गुलांट लेती है। एके सखी रंग भवन के मेहेराव झरोखों से ऊपर वनों के जाती है और बन के मेहेराव झरोखों से बीच रंग भवन के आती है।

या विध से एक पहरलों आनंद लीला और रस किलोल करती है, पीछे एक पहर के आगे नीलो-पीले मंदिर के हाजिर होती है।

।। तीसरा प्रहर को उत्थापन ।।

अब जा छिन रूहें संपूरन आगूं नीले-पीले मंदिर के आई सौई ततखिन किमाड खुल गए । समस्त साथ ने दरसन पाए। चारों चरन कमल मासूक के छाती कुच अधुर नैनों से लगाए और मुखचंद्र मासूक के मानिंद चकोर के एक टक हेर रही । और साथ खुसवोए मुखारबिन्द मासूक के मानिंद भ्रमरों के गुंजार सब्द करने लगी। आस-पास दसहूं दिसन तें खुसवोए रस चाखनें लगी। ज्यों कर महा कंगाल महासूम महा दरिद्री, हीरा जवाहर मोती असरफी पवे और आपा पछाड के लूट मचावे। इन विध से रूहें बारों हजार अनंत

विध की छबि झाँकियों के अमोलक रतन घडी-घडी पल-पल लूटती है।

अब दुलहा-दुलहिन ने सेज से उठ के अमृत तें मीठे नख-सिख सिनगार किए। और मुखारविंद में जानूं सुधा सिंधु हिलुरत है और सिनगार हक मासूक के हरदम ऊपर हर चस्म के जादू करते हैं। और एक ही नजर में मासूक प्यारों कोट-कटाक्ष करते हैं। जिनमें मासूक बेकल बेकरार हो जावे, संपूरन रुहों ने ऐसे सिनगार जादू के लिए हैं। और महा उछरंग उमंग में संग मासूक के चली,मासूक वनरा के संग वनरी को लिए हुए साथ कोटों उछरंगो उमंगों के और छबों कोटों लहरों के और साथ कोटों नूर जहूर रंग तरंगो के और साथ कोटों कटाक्षों के हंसते-खेलते लटकनी चाल से ऊपर छाजे के आए। गृदवाय झुंड रूहों के सोभायमान हैं और मध्य में किशोर-किशोरी रजित हैं।

।। पशु पक्षियों का झुंड ।।

इन विध से ऊपर पडसाल के खडे होके सामें दसहूं दिस विषे देखा, संपूरन दसहूं दिस विषें जो चिज है बीच सेजदे के आई और हक-बंदगी का बजा ल्याई। हक हादी रूहें जो नजर करके देखे तो आगे अनंत कोट फौजें तैयार खडी हैं। अनंत कोट झुंड हाथियों के खडे हैं सो अनंत कोट झुंड अनंत ही कोट रंग के हैं। एक झुंड एक रंग का, दूसरा झुंड दो रंग का, तीसरा झुंड तीन रंग का, चौथा झुंड चार रंग का इस विध से एके झुंड अनंत कोट रंगों

Nijanand App

के हैं। एक-एक झुंड कई कोट हस्थियों का है। एक-एक हस्थि संपूरन वजूद तिल-तिल में सिनगार करे हैं। अनंत कोट रतनन के सिनगार करे हैं, सो मानिंद अनंत कोट बिजुलियों के चमकते हैं। अनंत कोट सूर्जो का प्रकाश वजूद में उठा है। और अनंत कोट नंगों कें जो सिनगार करे हैं सो मानिंद अनंत कोट बिजुलियों के चमकते हैं। मिठाई और सुंदरताई को जानो महा सागर भरो हैं जो किसी हस्थि एक को नजर बांध के देखें तो उसकी मिठाई और सुंदरताई के सागर से कदी बाहिर न आ सकें। और उसके अनंत कोट गुन का पार न पावै अत्यंत महा तीक्षण तेज चाल चलत हैं और संपूरन पशु-पक्षियों की गतें भरत है। संपूरन पशु-पक्षियों की बोलियां बोलते हैं। कोई हस्थि अत्यन्त महा छोटे हैं जानों ए आज ही प्रगट हैं, एके दो दिन के से, एके तीन दिन के से । एके चार दिन के से, एके पांच दिन के से लगते हैं। याही क्रम से एके अत्यंत जवान है और उंचे पहाड से। और जे एक दिन के से प्रगटे दरसत हैं तिनके अनंत कोट झुंड हैं। याही विध से जितेक क्रम किशोर अवस्था लों होत है तिन हर क्रमों के अवस्था के हस्थियों के अनंत कोट झुंड हैं। संपूरन झुंड अपने-अपने माफक सिनगार किए हैं। जो हस्थि के अत्यंत महां छोटे हैं, सो भी आद-अनाद के हैं न कोई बडे हैं न कोई छोटे हैं, वास्ते आनंद लीला के अनंत कोट विध रखते हैं। और विधा गुन चाल चातुर्यता विषें सब ही बराबर है और सब ही सब विध पूरन हैं। जैसा यह एक क्रम हस्थियों का हुआ याही क्रम

संपूरन पशु-पक्षियों का है। अनंत कोट घोडों के अनंत कोट झुंड हैं, सो नख-सिख सिनगार किए हैं। पवन से तेजतर हैं और दोनों तरफ पर रखते हैं। झुडों के झुंड आसमान में उडत है और अत्यंत महां सुंदर किशोर हैं, और हक-हादी रुहों के चित चोर हैं, और मन मोहन हैं। और याही विध से रींछ बांदर लंगूर हैं सो अत्यंत कोट हुन्नरों में कमाल हैं। याही विध से सिंह से तेंदूर हैं सो अनंत बल प्राक्रम रखत हैं और अति सुंदर मीठे हैं। याही विध से तूती, सूआ, मैना, हंस गरुड मोर हैं सो एक-एक जाति के पशु-पक्षियों के अनंत कोट रंगन के अनंत कोट झुंड हैं। और अनंत कोट खूब खुसाली कैसी है के अनंत कोट ब्रह्मांड की रति रंभा ऊर्वसी सती सावित्री लक्ष्मी की सुंदरता एकठी कीजे ता आगूं खूब खुसाली के ऐसे हैं जैसे लक्ष्मी के आगे मृत्यु लोक को स्त्री होवे जैसे रति रंभा के आगें भीलनी होवे। खूब खुसालियां ऐस महा सुंदर है और बीच बदन के और भूषन बस्तरों के अनंत कोट सूर्जों के प्रकास रखती हैं । और रूहों के कांधे लगती है। रूहों के सांचे में अनंत कोट एक सी बराबर ढरी हैं और मानो निज हाथों से समारी है। और हक-हादी रूहों के मन मोहन को जानूं जादू वसीकरन की मूर्ति है सो बंगलों से अनंत कोट सिनगार करके आई हैं।

।। सुखपाल यात्रा।।

भोम छठी से चलके छः हजार और एक सुखपाल झरोखे से मुकाविल हो रहे हैं। चार पाय हैं और चार डांडे हैं ऊपर कलस

Nijanand App

रोसन है, षटछपर की जिनस है,सुंदर रोसन गाढी विछी है। और पांच तकिए सोभायमान है। बडी-बडी चार मेहेराब चारहूं दिसन को खुली है, और तरफ मोतियों की झालर झलकत है। मध्य में फूल जोतिका लटकत है और मन माफक चित आगे के चलत हैं, ऐसे जो आनंद की मूर्ति सुखपाल है सो तीसरे खंड के छः हजार झरोखों से मुकाविल है। श्री राज श्री ठकुरानी जी के चरन कमल की स्पर्स को बेसुमार तडफात है और मानिंद मछली के फर-फरात है। श्री राज श्री ठकुरानी जी दोऊ जुगल सरूप बीच एक सुखपाल के विराजमान भए। और छः हजार सुखपाल में बारा हजार सखी जोडे-जोडे विराजमान भई। जाछीन पूरन ब्रह्म अक्षरातीत मासूक ने दोऊ कदम मुबारक अपने बीच सुखपाल के धरे ताही छीन कोट नक्कारों और कोट नोंबतों के ऊपर एक ही बार चौगिरद चोपगीरी। और कोटांन कोट बंदरों और रीछों ने एक ही बार धोंसा मारा। संपूरन अखंड ब्रह्मांड परम धाम का झहलानें लगा और धोर सब्द बाजों को भराय रही। कोटान-कोट हाथियों के बुलंद झांझे झहनाती है और रींछ-बंदर ऊपर हस्थियों के बैठे हैं और हाथों से बजाते जाते हैं। नजर ऊपर अक्षरातीत मासूक के रखे हैं। और कोटांन-कोट नगारे सूतर लिए जाते हैं। और कोटांन कोट रीछ-बंदर हास्य उठाने वाली पोसाकें लिए हुए ऊपर सुतरों बैठे हैं और दोनों हाथों बाजे-बजाते जाते हैं। और नजर मासूक के बांध के कोटांन-कोट बंदर ऊपर घोडों के सवार है और नगारे बजाते हैं।

और कोटांन-कोट रीछ बंदर लंगूर कोटांन-कोट बाजे जिमी पर लिए जाते हैं। और एक बाजे को कोटांन-कोट विध से नितंब कटि छाती हाथ अंगुली मुख नासिक नेत्र भोंहै चलाते हैं सिर नचाते हैं। और कोटांन बाजे अंत्रीक्ष में चले जाते हैं। जाछिन जोन राग चहिए सो बिन बजाय बाजते हैं और अनंत कोट ताने गाउते हैं। श्री राज ठकुरानी जी सुंदरसाथ को छकाते हैं। ऐसे डोरे खेंचते हैं कि श्रवन विषें जो सुनने वाला है तिनको ऐंचते हैं। अनंत कोट घोडे कोतल अनंत कोट रंगों के बालबाल सिनगार किए हुए और अनंत कोट रतनों के भूषन पेहेने हुए हैं। कोटांन कोट सूर्जो समान रोसन है। अंग-अंग विषें जो नंगों के सिनगार किए हैं सो मानिंद कोटान-कोट बिजुलियों के चमकते हैं और कोटांन-कोट छबों और निर्त की कलाओं से नाचते चले जाते हैं। माफक ऊनों के देनों तरफ रीछ लंगूर बंदर बाजे बजाते चल जाते हैं। अनंत झुंड सिंह शेर तेंदुए चले जाते हैं और कोटांन-कोट झुंड रोझ गाय, बैल,पारौं के चले जाते हैं। कोटांन-कोट झुंड सुअर कूकर बकरों के और सांबर मृग मेढों के चले जाते हैं। कोटांन-कोट पशु चले जाते हैं और कोटांन-कोट पंखी ऊपर आसमान में चले जाते हैं। कोटांन-कोट झुंड तूती, सुआ, मैंना हंस गरूड मोर लालमुनैयों के चले जाते हैं। और कोटांन-कोट कबूतर गुलाटीयों लेते चले जाते हैं। और भी अनंत कोट पंखी अपनी-अपनी जाति जिनस झुंडों में चले जाते हैं। कोई गाते हैं कोई बजाते हैं, कोई पीउ-पीउ की रट लगाते हैं कोई अनंत

Nijanand App

कोट गुनों के अनंत कोट नाम जुदे-जुदे लेते हैं। संपूरन पसुओं की चोपदारी बंदर करते हैं और संपूरन पक्षियों की चोपदारी सुआ मैना करते हैं सो जिस को जिस मिसल में चाहिए। जो मिसल जहां चाहीए तिनको साफ दिल हक के मिसल रखत हैं। और सुआ मैना माफक दिल हक-हादी रूहों के मिसल आदाब करते हैं। और बंदर माफक हुकम सुआ मैना के मिसल आदाब करते है। और फौज माफक हुकम बंदर चोपदारों के रहती है। एक बाल बराबर कोई आगे पीछे नहीं होता है। और कोटांन-कोट जवेरों की पुतलियां ऊपर हस्थियों के सवार हैं, कोई होदों में कोई किलाए बैठी है। और अति तेज चंचल हस्थियों को चित चाहे हूलती है,और अत्यंत महा सुंदर चैतन्य हैं और सब ही के नैन प्रान को अत्यंत मीठी और हक-हादी रूहों को अत्यंत प्यारी, अति नाजुक,सुकुमारी अलबेली अनियारी है और नाम मात्र जडता रखती है परन्तु काम सब चैतन्य सखी के करती है। और डोलन-बोलन चितवन में जादू के टोना है और रूहों के प्रान प्यारे खिलोना है सो कोटांन-कोट ऊपर मस्त घोडों के सवार है। और अंत्रीक्ष आसमान में चली जाती है। कोटांन-कोट निसान के हस्थि चले जाते हैं तिन पर जुदे-जुदे रंगों के निशान है। कोटांन-कोट निशानों के घोडे चले जाते हैं तिन पर जुदे निशान है सो फौज-फौज के जुदे-जुदे निशान है। और कोटांन-कोट जवेरों की पुतलियां है ऊपर सिंह सेर तिंदु चिते हाथी घोडे बैल रोझ बकरे मैढें मृगों के रथों पर चढी है। और संपूरन सैन्य में सोभा देती है और

संपूरन पशु-पंक्षियों के चित को खेंच लेती।

अब छः हजार और एक सुखपाल है तिन पर हर-एक जो सुखपाल के अष्टदिस विषें कोटांन-कोट खुब खुसालियां निरत करती है। और स्थावर जंगम मन-मोहन गान अनंत विध का गाउती है। अनंत विध के बाजे अनंत विधसों बजावती हैं। आगू सुखपाल के अंत्रीक्ष नाचती चली जाती है। प्रिया प्रीतम सुंदरसाथ को अनंत विध के हाव-भाव कटाक्ष बतावती है और पीउ के नैनों नैन मिलाउती है। और चारहूं दिस तें अखंड आनंद की लूट करती है। और आठहूं दिस सुखपालों के खूब खुसालियां सोभायमान हैं । और खूब खुसालियों में लग के ऊपर दांए-बांए आगे-पीछे पांच दिस विषें अनंत कोट झुंड पंखीयों के चले जाते हैं। ऊपर जीमी के तलें सुखपालों के अनंत कोट झुंड पसुओं के चले जाते हैं। अनंत कोट पसु जो अनंत कोट रंगों के हैं तिन हर एक पशु का जोती को थंभ जिमीन से उठ के ऊपर आसमान के लगा है। और आसमान मे जो अनंत कोट पक्षी है तिनकी जोती का थंभ ऊपर तलें जिमीन में लगा है। संपूरन जातें पसु और पंखियों की ऊपर जिमीन और तले आसमान के चली जाती है।

अनंत कोट नंगन करके जडित एक हीरे की निजधाम की जो जिमी है, सो अनंत चित्रामन कर संयुक्त हैं। तिन चित्रामन से अनंत कोट रंगन की जोतिन की धारें उठी है, सो जिमी से ऊपर आसमान लों लगी है, और अचल अखंड खडी है। और नीला है

Nijanand App

रंग जिसका अनंतानंत चित्रामन कर संयुक्त है ऐसा जो परमधाम का आकास है। तिननें अनंत रंगों की ज्योति की किरनें छोडी हैं सो ऐसा भासत है कि जैसे अनंत रंगों की जोत की अखंड धारें लगी है, ऐसेई बन मोहोल मंदिरों की किरनें उठी है। तिन संपूरन किरनन विषें हक-हादी रूहों का तेज जोति कैसी है, जैसे तारागनों में सूर्ज रोसन होवे। रोसनी हक की संपूरन रोसनियों की पातसाह है और सबों पर छाय रही है।

इन विध से श्री राज श्री ठकुरानी जी समस्त सुंदरसाथ सहित सुखपालों पर विराजे हुए, हादी रूहों खूब खुसालियों, जवेरों की पुतलियों पसु-पक्षी बन-बगीचों मोहोल मंदिरों को सुख आनंद देते हुए और अनंत कोट लेहेरें लेते हुए और दस दिसा का तमासा देखते हुए खेल खेलाउते हंसते-हंसाउते अनंत कोट घमंडों से ऊपर घाट-पाट प्राप्त हुए। जोई सप्त घाट के पसु-पक्षी बन-बगीचे मोहोल मंदिर पांच तत्वों ने श्री राज श्री ठकुरानी जी को सहित समस्त सुंदरसाथ के देखे सोई रोम-रोम आनंद में मग्न होके बीच सेजदे के आए। और पसु-पक्षी बीच हाल के मस्त होके नाचने लगे। और जल जमुना जी को उमड-उमड और उमंग-उमंग के मारजाद जल रोंस की अपनी छोड के ऊपर पाल के आयो। दीदार औऱ चरनामृत प्राण आधार के लेके फेर बीच मरजाद अपनी के प्राप्त भयो।

अब श्री राज श्री ठकुरानी जी सहित समस्त सुंदरसाथ के

सुखपालों से उतर के कोट छबि झाकियों से ऊपर चांदनी पाट-घाट के आय ठाढे भए। और दसहूं दिस का तमासा देखने लगे।

।। यमुना वन शोभा।।

कोटान कोट सूर्य समान झलकार एसी श्री जमुना जी की एक हीरे की दोनों पालों हैं, सो पालें हजारों कोसों चौडी है। तिन दोनों पालों पर मानिंद विजुलियों के नंगन जडित नंग मयी वृक्ष हैं । सुंदर पांच हारें बीच पाल के सोभायमान है। तामे एक हार जो किनार की है ताकी आधी डालियां बीच जल-जमुनाजी के झलूब रही है। एक घाट के किनार कि जो हार है सो अढाइ से वृक्षों की हैं।

इन विध से सातो घाटन के किनार-किनार के जो वृक्ष हैं सो दोनों पालों के साढे सत्रा से दूने पैंतीस से दरखत भए। सो ए दरखत कैसे हैं कि दोरी बंध बराबर है। कोई वृक्ष एक बाल बराबर घटबढ, ऊंचा निचा, आगे-पीछे नहीं है। मूल, पेड, डाल, फल-फूल पात दोरी बंध बराबर है और आपुस में ज्योति से ज्योति जंग करत है। मूल की ज्योति मूल से, पेड की पेड से, डाल की डाल से, फल की फल से, फूल की फूल से, पात की पात से, नूर ज्योति की जंग हो रही है। ज्यों कर नंगन की मोहोलातों में झंझरी झरोखे मेहेराब खंड होते हैं। इन विध से इन पांचों हारों के सहित झंझरी झरोखा मेहेरावों के ऊपरा ऊपर पांच खंड हैं सो एसा भासत है,जैसे श्री जमुनाजी के दोनों तरफ दोनों पालों पर नंगों की मोहोलात नंगन जडित पांच

Nijanand App

खंड की बनाई होवे। मध्य में श्री जमुना का जल दूध से उज्जल मिश्री से मीठा आसमान लों रोशन बहता चला जाता है। श्री जमुना जी अत्यंत मीठी सुंदर सुहावनी गर्जना करती है। अनंत कोट शोभा सिनगार छबें रखती है। और सातों घाटों के दोनों तरफ दो पूल सोभायमान है, तिन पर पांच खंड की मोहोलात है।

सातों घाटों के मध्य में श्री जमुना जी के ऊपर डेढ से मंदिर की लंबी चौडी एक पाट है, तिस पर बारा थंभ है, ऊपर चारों तरफ चादनी है और चारों तरफ के पाल से सिढियां उतरी है, सो अत्यंत महा सोभायमान है। नीलें पीलें लाल सेत श्याम कई रंगों के कमल दल फूलें हैं और हंस मैना चकोर कोयली कई विध की चोहो चांद चकोसर कर रहे हैं। ऐसा तमासा देखके श्री राज श्री ठकुरानी जी ने सखियों को खेलने की अग्या दई। संपूर्ण संग श्री राज के आनंद लीला करने लगी।

।। वन विलास।।

अब कोऊ सखी श्री राज के आगे नाच करती है, कोऊ बडे उछरंग उमंग में गान करती है, कोऊ सखी अनेक विध सों बाजे बजाऊती है, कोऊ सखी आगे श्री राज के आय के कई विध की नकल ल्याउती है,कोऊ सखी सामे श्री राज के खडे होके एक टक हेरती हैं। कोऊ सखी श्री राज को बीडा ऊपर के देती है। कोऊ सखी पीकदानी लिए खडी है। कोई सखी ऊपर श्री राज के छत्रताने हैं। कोई सखी श्री राज के बस्तर लिए हैं। कोऊ सखी

भूषन लिए हैं। कोऊ सखी पानडबे लिए हैं, कोई सखी श्री राज के अत्तरदान लिए हैं। कोई सखी श्री राज के छडियां लिए हैं, कोऊ सखी वृक्षन पर चढी है, कोऊ सखी देहुरीयों के कलसन के आसपास फिरती हैं। कोऊ सखी जल के रोस पर दौडती फिरती है, कोऊ सखी मोरों को नचाउती है, कोउ बंदरों को नचाउती है। कोउ बंदरो को गुलाटीयां खवाउती है, कोउ मानिंद बंदरों के आप गुलाटीयां खाती है, कोउ सखी झुंड मृग कस्तुरीयो के मोहित करके पीछे लगाए फिरती है, कोई सखी मोहन बाजे बजाय के सरपों को वजूद से लिपटाय फिरती है और पीछे अनेक दौडाउती हैं। कोई सखी कुदती हैं, कोई सखी फांदती हैं, कोई सखी दोडती हैं, कोई सजी चढती हैं, कोई सखी उतरती हैं, कोई सखी पंखीयों की गतें भरती हैं, कोई सखी पंखीयों की बोली बोलती हैं, कोई सखी श्री राज को हाथ पकडे हैं, कोऊ सखी श्री राज सो एकांत बात करती हैं, कोऊ सखी ऊपर श्री राज के फूल वर्षावती हैं, कोऊ सखी श्री राज के मुकट बांधती हैं, कोऊ सखी छत्री हाथ मे देती हैं और दरपण नूर का दिखाती है। कोई सखी नवल सिनगार करके आती हैं और मुकुट मे हो अपना सिनगार देखती हैं। कोऊ सखी पीउ नैनो नैन मिलावती हैं और बीच पुतली हकके सरुप अपना निहारती हैं । कोऊ सखी हकसे गलवहिया लेती है।

श्री राज भी बारा हजार रूप धर के लीला करत हैं। काहू सखी से एकांत में बात करत हैं, काहू सखी से गलबहियां बैठे

Nijanand App

हैं,काहू सखी से गलवहीयां फिरते हैं, काहू सखी के संग गाते हैं, काहू सखी के संग बजाते हैं, काहू नाचते हैं, कहूँ कूंदते हैं, कहूँ फांसते हैं, कहूं पोइयों चलते हैं, कहूँ मानिंद तुरंगों के आपा-पाछा नांख के एक दम धाउते हैं, काहू सखी के संग झरोखे बैठे हैं। काहू सखी के पाछें-पाछें ऊपर छाजों के फिरते हैं, काहू रहस रमन करते हैं, काहू सखी के साथ फूदडी फिरते हैं, काहू सखी के साथ डालों-डालों फिरते हैं, काहू सखी को अधुरामृत पीते हैं, काहू सखी को अंक भर लेते हैं, काहू साथ मासूक के ऊपर जहाजों सतसों पर बैठते हैं, काहू सखी को कंठ भर लेते हैं, काहू को सेन इससारते देते हैं,काहू को नेंनों नैन मिलाते हैं,काहू के अंग से अंग लगाते हैं,काहू को तरफ मुसक्याते हैं,काहू को बस्तर पेहेनाते हैं,कहूँ काहू को भूषन पेहेनावते हैं,काहू के नैनों अंजन आंजते हैं,काहूं की पटिया पारते हैं और बेनी सम्हारते हैं,कहूँ घोडे पर चढते है,घोडे को नचाते हैं और कुदाते हैं। कहूँ सामी धाक देते हैं। पीछे बारा हजार घोडे रुहें दौडाती हैं, कहूँ हक कोडा फेरते हैं। पीछे श्यामा अपने घोडे को कोडा लगाती हैं। माफिक हक घोडे के घोडा अपना फेरती हैं। श्यामा के घोडे के पीछे बारा हजार रुहें अपने घोडे फैरती हैं। कदी हक-हादी रुहें हथियों के सवार होते हैं और वन-वन बगीचों-बगीचों सैर करते फिरते हैं। कदी अनंत कोट जवेरों की पुतलियों का ऊपर पाल के अनंत को मोहोल मंदिर गढ कोट बनाते हैं तिनमें हक-हादी रुहें कई कोट विध से खेलते हैं।

।। पाल में हाट प्रदर्शन ।।

अब कदीऊपर पाल के अनंत खूब खुसालिमों का हक-हादी रुहें कई विध के बाजार रचते हैं। तिनमें कई विध के चौखूटे चौहटे रखें हैं। तिन चौक चौहटों के मध्य में कई विथ के बाजार लगे हैं, तिन बाजारों में कई खूब खुसालियां कई विध के मेवा लिये बैठी हैं और कई खडी हैं। श्री राज ठकुरानी जी सुंदरसाथ के नूरजमाल में सरमस्त और सरसार हैं। दीदार ही में अनंत आनंद लूटती है और जुदे-जुदे बाजारों में जुदी-जुदी जिनसे लिए बैठी हैं और हक-हादी रूहों की इंतजार में हैं। हक संपुरन बाजारों में श्री श्यामाजी के गले में गलबहियां डाले फिरते हैं और संपूरन सखी आपुस में गलबहियां डाले गली-गली गाऊती फिरती हैं। हर एक बाजारों का जुदा-जुदा सुख लेती हैं और हर एक खूब खुसालियों को कई विध के सुख देती फिरती हैं। कदी हक-हादी रुहें ऊपर सिंहों के बैठते हैं और सिंहों को दौडाते कुदाते लडाते हैं। कदी सेर, तिदुआ, चीतोंपे सवार होते हैं और दौडाते कुदाते लडाते हैं। कदी हंस, गरुड मोर हक-हादी रूहों के ऊपर पीठ अपनी के सवार किए हुए अंत्रीक्ष में उडाते हैं। कदी एक वृक्ष से ऊपर दूसरे वृक्ष के जाते हैं और उडके ऊपर कलसों के बैठते हैं। कदी कलसों से उडके ऊपर दूसरे कलस के जाते हैं और हक-हादी रूहें ऊपर पीठ के सवार हैं। हंस गरूड मोर महा आनंद में मग्न हैं और पीठ अपनी से उतारना हक-हादी रूहों का नहीं चाहते हैं हक-हादी

Nijanand App

रूहों को ऊपर पीठ अपनी के लिए हुए नाच करते फिरते हैं। जब जोन तरफ जाते हैं तब इसी तजल्लु (तेज) से जाते हैं और माफिक पारब्रह्म के दबदबा दिखाते हैं। और कदी तरफ हौज कोसर जाते हैं, तहां भी अनंत कोट नए-नए खेल करते हैं। इस प्रकार पाल और रोंस और हजारन वृक्ष पाल ऊपर के कोटानकोट खूब खुसालियों से और अनंत कोट जवेरों की पुतलियों से भराए रहत हैं। और मानिंद कोटान कोट लसकरों के सोर होता है मानिंद कोटान कोट सहरों के और मानिंद कोटान कोट फौजों के सोर सराबा गुल चोंहों चांद होता है। और संपूरन हौज कौसर कई विध के आनंदों से और कई विध की हुस्न खुबी सोभा से भराए रहत है। मध्य में किशोर-किशोरी और गृदबाए रुहों की जोडी सोभायमान हैं। और अनंत कोट मोजन में भरे हुए हैं। अनंत कोट मोजें करत हैं।

।। जल यात्रा ।।

अब कबहूँ हक-हादी रुहें जहाज पर बैठत हैं। और कबहूँ छोटे-छोटे सतेसों पर जुदे-जुदे बैठत हैं। और हक-हादी रुहें संमपूरन हौज कोसर में दौडावत फिरत हैं और टापू को परिक्रमा देत फिरत हैं। कबहूँ बारहीं हजार एक ही जहाज पर बैठत हैं, नवरंगबाई निरत करती है और जहाज टापू को चलाते हैं। संपूरन जल के जानवर आसपास जहाज के चले जाते हैं। कबहूँ जल के जानवरों पर सवारी होत हैं। कोई सखी कई रंग के मगरों पर बैठी है, कोई सखी कई रंग के मछों पर बैठी हैं। कोई सखी कई रंग के सर्पों पर बैठी

हैं। कोई सखी जल पंछी पर बैठी हैं। कोई सखी बतकों पर बैठी हैं। कोई सखी जल-मानसों पर बैठी हैं। कोई सखी पनडूबियों पर बैठी हैं। और भी कई जानवरों पर सवारी करके हक-हादी रूहें कई विध से रिंगावते हैं, दौडावत है, लडावत हैं और टापू को परिक्रमा करत हैं। चारों तरफ कोटान कोट खूब खुसालियाँ और जवेरों की पुतलियां और अनंत कोट पसु-पक्षी भराय रहे हैं सो श्री राज श्री ठकुरानीजी को तमासा देखाते हैं और आनंद कलोलें करते हैं। कबहूँ ऊपर चांदनी के पधारत हैं और चांदनी की किनार पर कमर भर ऊंची जो दिवाल है तिस दिवाल में एक कुरसी की चौतरीयां गृद फिर आई हैं, ऊपर लाल कांगरी मानिक की है। तिस दिवाल के माहें बारा हजार कुरसियां हैं, तिन कुरसियों पर सखियां बैठी हैं। अनंत कोट मोजें और मजा मारती है, बेहद सुख लूटती हैं और दसहूँ दिसका तमासा देखती है।

इस प्रकार ऊपर आसमान के श्री राज श्री ठकुरानीजी समस्त साथ के तेज ज्योति का दरिया लहरात हैं। और तले जल में श्री राज श्री ठकुरानीजी सुंदरसाथ झिलमिलात हैं। टापू और पाल के बीच में हौज कोसर मोजें लेत हैं। दूध से उज्जल मिश्री से मीठे जल की रोशनी ने आसमान में मंडल बांधो हैं। ऊपर टापू चांदनी के बिराजमान जो हक-हादी रूहें हैं सो टापू की चांदनी से एक ज्योति को थंभ चलो सो आसमान में जाय लगो। बीच इस ज्योति थंभ के अनंत कोट सोभा हैं और बीच इसके अनंत कोट तमासें हैं।

Nijanand App

अनंत कोट रंगों की जुदी-जुदी लेहेरें उठती हैं और जोतिने थंभ को घेर के ज्योति जल को सफेद फिर बला हैं। तिन सफेद नूर जल को घेर के पाल पर जो अनंत रंग के बन है सो अनंत कोट रंगों की ज्योति का कोट बंधा है। ए तीनहूँ सोभा आसमान में रोसन है। और पाल के तलें अनंत कोट हाथी अनंत कोट घोडे सिनगार कीए हुए इंतजार खडे हैं। वास्ते दीदार के घूमत-झूमत नाचत कूदत हैं और आवाज मीठो बोलत हैं। अनंत कोट सिनगार किए हुए, अनंत कोट रथ हस्थियों के खडे हैं। अनंत कोट रथ जुगल हस्थियों के और अनंत कोट रथ एक-एक हस्थियों के हैं। अनंत कोट रथ जुगल तुरंगों के हैं और अनंत कोट रथ एक-एक तुरंगों के हैं । और अनंत कोट रथ बैल, बकरे, मृग, मेढे, रींछ, रोझों के हैं। अनंत कोट रथ सिंह, बाघ, तिंदुआ, चीतों के हैं और अनंत कोट सवारी बडे-बडे जानवरों की एकहरी हैं। सो पसु-पंखी रजाइस मासूक के एक-एक सेवा जाहिर और अनंत कोट सेवा बातून करत है।

।। पुखराज पर्वत पर आरोहण।।

अब जब कबहूँ हक-हादी रूहें तरफ पुखराज के पधारत है। पछिम की घाटी होके पुखराज की चांदनी पर चढत हैं। जिमी से छः लाख कोस को चढाव हैं, सिढियों के अंतपें एक दरवाजा है चारसे कोस का। तिस दरवाजे के पेहेली तरफ चांदनी है, और एली तरफ अनंत कोट सीढियां हैं, सो अनंत कोट सीढी अनंत कोट रंग की है। सो अनंत कोट दिवालें अनंत कोट रंगों की आगे सनमुख

परी है, तिनको मझियाय के चांदनी पर जाते हैं । अनंत कोट फौजें पसु-पंखियों की, अनंत कोट फौजें खूब खूसाली और जवेरों की पुतलियों की संग हैं, सो मानिंद अनंत कोट लसकारों के मेला हुआ है। अनंत कोट पुतलियां नाचती है और अनंत खूब खुसालियां गावती और बाजे अनंत रंग के बजावती हैं। कोटान कोट सहर लशकर जवेरों की पुतलियों की और खूब खुसालियों के हैं। कोटान कोट सहर लशकर पसु-पंखियों के हैं, सो जहां श्री राज श्री ठकुरानी जी जाते हैं तहां अनंत कोट लशकर सहर से बस जाते हैं। अनंत कोट सोर चोहो चांद होत हैं और आगूं हक-हादी रूहों के अनंत कोट तमासे होत हैं। और कदी श्री राज श्री ठकुरानी जी समस्त सुंदरसाथ को लेके तरफ पछिम की ओर पधारत हैं। श्री ठकुरानी जी सुंदरसाथ सहित प्रान आधार को लेके हस्थियों पर चढते हैं तब अनंत सोभा और सुख सबही को होत हैं। श्री जुगल किशोर हस्ति पर विराजत हैं और साथ सब हस्थियों पर विराजते हैं। खूब खुशालियां ऊपर मस्तकों के बैठी हैं और किलाऐं बैठे के हस्थियों को हूलती हैं। और हक-हादी रुहें बीच हौदा के बैठत हैं । और आगे पीछे अनंत कोट फौजे चली जाती हैं। अनंत कोट बाजे बजाते चले जाते हैं। अनंत कोट हाथी झूंमते-झूंमते चले जाते हैं, अनंत कोट किसोर घोडे नाचते कूदते चले जाते हैं। अनंत कोट खूब खुसालियां और जवेरन की पुतलियां नाचती गाउती हैं और बजाउती चली जाती हैं। अनंत फौजों में अनंत कोट रंगों के धजा

Nijanand App

फहरात हैं। अनंत कोट निसान अनंत रंगों के और अनंत कोट,फौजें अक्षरातीत की नूर की चली जाती हैं। फौज जो अक्षरातीत की चली जाती हैं ताके दाँए-बाँए अनंत कोट फौजें खूब खूसालियों की और जवेरों की पुतलियों की वास्ते सेजदे के खडे हैं। अनंत कोट फौज पसु-पंखियों की वास्ते सेजदे के खडे हैं, सो लाखों कोस तक एक सफ खडी हैं। जिन-जिन के आगे सवारी अक्षरातीत की पोहोचत हैं, सो सेजदा अक्षरातीत को बजाउत जात है। और अक्षरातीत भरतार सब ही को मेहेर नजर की कटाक्षों से भिजावत जात हैं। इन विध से बीच मेदान के पछिम के जाते हैं।

।। पश्चिम की चौगान में घुड दौड ।।

अब कबहूँ हस्थियों को बीच रेती पश्चिम के जाते हैं। कबहूँ हस्थियों को बीच रेती पश्चिम के दौडाते हैं और कबहूँ छः हजार हाथियों पर जुगल-जुगल बैठत हैं। कबहूँ एक-एक बारौं हजार रूहें बारा हजार हस्थियों पर बैठती हैं और हाथियों को बीच उस मे दान के दौडाउती-लडाउती बुलाउती हैं। कई विध की चाल चलाउती हैं और हक जो चढे हैं ऊपर मस्त मतंग घोडे के, तिन पर हस्थी अपना हूलती है, तब हक घोडे को लेके भागते हैं। और हाथी रूहों के पाछें भागते हैं सो कबहूँ बारा हजार हाथी एक के घोडे को नहीं पकड पाते हैं। और घोडा हक का एसी चलाई करता है के सूंढ पर होके ऊपर मस्तक के जाता है। और अति चपल गत से फेर उतर जाता है बीच सूंढ हाथी अति चपलों के नहीं आता है। कदी

हक चंचल चपल घोडे पर होके चिबूक रूह की चूम जाते हैं और हाथी रूहों को नहि पाते हैं और कदी घोडे हकके को, हाथी रूहों को घेर लेते हैं। तहां अति चंचल गत से घोडा हक का सिकुड के पगों हाथियों के निकल जाता है और हाथी रूहों के नहीं पाते हैं। कदी हक मासूक गृदवाय खडे जो रूहों के हाथी हैं तिन हाथियों के सनमुख घोडा अपना दौडाते नजदीक हाथियों के जाय के मस्तक देते हैं। सो घोडा हकका हाथी हौदा कलस को लांध के हाथियों के पहिली तरफ पडता है और भाग जाता है। कदी श्यामा जी को आद देके बारौं हजार ऊपर घोडों के चढती हैं। और एक मासूक ऊपर हाथी के बैठत हैं। और रूहें हक के हाथी की पूंछ या पुट्ठ पर हाथ देके भागती है तब हक मासूक पीछे उन सवारों के हाथी अपना डालते हैं और घोडें रूहों के भागते हैं। सो हाथी हक का अति चंचल चपल गत से दौड के घोडे रूहों के पकड लेता है। काहू सखी के घोडे की पूंछ पकड लेता है। और घोडे को आगे चलन नहीं देता हैं। काहू सखी के घोडे के पुठे पर हाथी हक का गदकों मारते हैं। काहू सखी को घोडे की पीठ पर से खेंच के ऊपर जिमी के बैठारत हैं। बारा हजार घोडे रूहों के बारा हजार तरफ भागते हैं। तब हाथी हक मासूक का पीछे बारौं हजार के परत हैं, सो बारौं हजार रूहें हक मासूक और हाथी हक मासूक का अपने-अपने पीछे ही देखती हैं। जैसी-जैसी अत्यंत तेज खुरी घोडे रूहों के देते हैं, तैसे-तैसे हाथी हक का सिताबतर पकड लेता है। और कदी

Nijanand App

श्यामा जी को बीच हौदा के बैठारत हैं और आप ऊपर किलाए पर बैठत हैं। और बारा हजार रूहें ऊपर मस्त मतंग तेजतर घोडों पर सवार हैं। गृदवाय हाथी के सोभायमान हैं और आस-पास बारौं हजार सवार अपने-अपने घोडे कई विध से चलाते हैं। और मध में जो जुगल किशोरी हैं तिनका मजा कई विध के लेने चले जाते हैं। और चौगान की किनार पर अनंत कोट फौजें खूब खुसालियों की और जवेरों की पुतलियों की और पसु-पंखियों की खडी है। सो अनंत विध की छबि झाँकियां छटा देख के और आनंद लीला की रस किलोलें विलोक -विलोक बीच प्रेमानंद के मग्न होके चित्रामन के से लिखे खडे हो रहे हैं। किसीपें दम नहीं मारा जात हैं। और कदी संपूरन सखी ऊपर हस्थियों के बैठती है। और किलाए खूब खुसालियां बैठती हैं। हजारन हाथी पूरब दिसा से पश्चिम को हजारन हाथी पश्चिम से पूरब को दौडाते हैं। हजारन हाथी उत्तर से दक्षिण को हजारन हाथी दक्षिण से उत्तर को दौडाते हैं। हजारन सखी संपूरन हाथियों को घेर के हाथी अपने गृदवाय दौडाती हैं। और कदी हजारन-हजारन हाथियों के बारा हजार करत हैं। और बारा हजार रंग के बारा हजार जो हाथी हैं, तिनको सीधे उलटे दांए-बांए फेरत हैं। पेहेली हार हाथियों की पूरब से उत्तर हो परिक्रमा देत हैं, दूसरी हार पूर्व से उत्तर में हो जात हैं तो चौथी हार फेर पूर्व से दक्षिण हो जात हैं।

इन विध से बारह हारें वर्जिद फिरती हैं और अनंत कोट

सुख सोभा धारत हैं। कदी श्री राज श्री ठकुरानी जी समस्त सुंदरसाथ ऊपर चंचल चतुर चपल घोडों पर चढते हैं और न्यारा-न्यारा मजा लजत लेते हैं। प्रथम बीच रोसन मेदान उज्जल रेती के हक अपना घोडा चलावते हैं। और हादी रूहों को खडे-खडे तमासा देखाते हैं। और कोट सूरज समान रौसन जो हकका घोडा है तिन पर कोट बिजुली समान जो नूर तजल्ला है, सो अदभुत छबि से बिराजे हैं। और दम-दम पल-पल हर एक छब कटाक्ष गतों में हक मसूक मानिंद कोट बिजुली के चमकत हैं सो कैसे भासत हैं जैसे बीच ज्योति के जिमीन आसमान में सूर्ज का घोडा बनाय के बिजुली का सवार लेके ऐसे बीच चौगान पश्चिम के हक मासूक खेलत हैं और पिचकारी अनंत सुख की ऊपर हादी रूहों के मेलते हैं।

अब प्रथम अनंत छबों से कई विध का कोडा देते हैं, आडे में आडा और टेढे में टेढा घोडा फेरते हैं। और ज्यों-ज्यों फेरते हैं त्यों-त्यों घोडा हकका तेजतर होता है। और जिमीन को छोड-छोड देता है। और बीच आसमान के आउता है, तिस पीछे श्री ठकुरानी जी आस्ते-आस्ते घोडा अपना पीछे घोडे हक के लगाउती हैं। और पीछे हक के माफिक हक के कोडा देती हैं। दोनों सवारो की महा अदभुत झांकी होत हैं। श्री ठकुरानी जी घोडे अपने को कदी पीछे घोडे हकके घोडा अपना लगाउती हैं। कदी घोडे अपने को सामी घोडे हकके वर्जिद ल्याउती है और हाथ सों हाथ मिलाउती है। कदी बराबर हक के दौडावती हैं और कई कोट छबें दिखाती

Nijanand App

हैं। ए दोनों सवार के कोट विध का खेल कर-कर के और कई कोट विध की झांकी छटा छबें दिखा-दिखा के दिल हर रूहों के लूटती हैं। और कदी दमानक मारजात हैं और कदी बान घाले जाते हैं। कदी बीच छाती रूहों के पैनी (अनी) बरछी की टिकाते हैं। कदी नंगी समसेर ऊपर जान के चम चमाते हैं।

इन विध से ए दोनों सवार हमेसा हमेस लूट भी करते हैं और घाव भी करते हैं। तिस पीछे बारौं हजार रूहों ने घोडों अपने पीछे घोडे हक-हादी के डाले और अपरंपार नूर जूर एक ही बार हुआ। हजारन सखी हजारन घोडा पूर्व से पश्चिम को और हजारन पश्चिम से पूर्व को और हजारन दक्षिण से उत्तर को और हजारन उत्तर से दक्षिण को दौदाते फिरते हैं। और हजारन सवार गृदवाय को दौडाते फिरते हैं। और हजारन रूहें अति चंचल चपल तेजतर घोडों को मंद-मंद लिए जाती हैं। और हजारन सखी आपा पछाड के सामी खुरी देती हैं और कई विध के खेल करती हैं। इन विध से जब हक-हादी रूहें पश्चिम की चौगान पधारत हैं तब इन विध से अनंत खेल खिलते हैं।

।। छः घडी की लीला ।।

अब जब बडे वन पधारते हैं तब कई विध के हिंडोलन का सुख लेते हैं। और सात घाट के विषे पधारत हैं तहाँ अनंत विध के खेल करत हैं और अनंत विध के आनंद देत हैं। और जो चीज श्री निजधाम में हैं सो संपूरन श्री राज की दूजी मूरत है और सच्चिदानंद

की सूरत हैं और सकल गुन कर परपूरन हैं। पाल श्री जमुनाजी की कैसी हैं के एक हीरे की हैं और अत्यंत चमकीली महा साफ है। और बेसुमार ज्योती रोसन है और मनिंद दरपन के अत्यंत उज्जल साफ झिलमिल हैं। तिन ऊपर पांच हारें नगन के वृक्षन की जगमग हैं। मूल पेड डालियां फल-फूल पात जुदे-जुदे रंग के जवेरों के हैं मानिंद मोहोलात के मंडल बांधा हैं। और तले मध्य अंतपें अत्यंत महा सुंदर मीठा है। संपूरन वृक्षों का तले पेड जुदा-जुदा है। और ऊपर पांच खंडलों एक मंडल बांधा हैं। एसा मंडल के बीच उसके बाल भर दरज (छिद्र) नहीं सो संपूरन वृक्ष मंडल पेडों समते पाल में झिलमिलात हैं। सो संपूरन पाल चित्रामान समेत पत्र-पत्र में झिलमिलात है। और पेड तले से भोम भरलों सीधा अत्यंत महा साफ-साफ हैं। और बेसुमार अपरम्पार चित्रामन लिखा है अनंत कोट वनसपति लिखी हैं। अनंत कोट वनसपति में अनंत कोट पसू पक्षी बैठे हैं और जिकर करत हैं। और हर एक पेड में अनंत कोट पुतलियां चित्रामान की लिखी हैं सो पुतलियां आपुस में गान करती हैं। कोऊ गावती हैं, कोऊ बजाऊती हैं, कोऊ नाचती हैं, कोऊ कूदती हैं, कोऊ बाहिर सखी से नैना जोरती हैं। कोऊ हंसती हैं, कोऊ मुसक्याती हैं। कोऊ उठती हैं, कोऊ बैठती हैं, कोऊ जाती हैं, कोऊ खडी हैं, कोई फिरती हैं।

इन विध के बीच पेड के पुतलियां चित्रामन की कोट खेल और आनंद रस किलोल करती हैं। पसू पंक्षी संपूरन चित्रामन के

Nijanand App

बीच चित्रामन के डोलत हैं और गुन सिफत हक हादी की बोलत हैं। और बोल-चाल रूप-रंग उनके तन मन प्रान जीव आतमा को अत्यंत मीठे लगत हैं। और प्राननतें प्यारी दरसत हैं और जुगल किसोर दुलहा जब संपूरन दुलहिनों को लेके ऊपर पालके खडे होते हैं । तब संपूरन पेडों में झिममिलात हैं। हर एक पेड में श्री राज श्री ठकुरानी जी हलवन चलवन कर रहे हैं। और लाखों कोसों की लीला हर एक पेड में झिलमिलात हैं और हर एक पेड में श्री जमुना जी चली जाती है। और दोनों पालों पर जो बन की मोहोलात हैं सो दोनों तरफ जल में दिखात हैं और उनके चबूतरा के दोनों तरफ कठेडा सोभाते हैं और मध्य में दूध से उज्जल मिश्री से मीठा श्री जमुना जी का जल चलो जात है हर एक पेड मीठे मासूक हक कादी रूहों को पडउत्तर भरत हैं। अनंत कोट राग-रागनी धुरपत ख्याल टप्पे तान गाउत हैं। और लिपटे से मानिंद तन रुह के सुख देत हैं। और आप सुख लेत हैं। छिन-छिन छबि रंग सोभा बदलत हैं और तरना नजर को छब सिंध उनोके से मुसकित हैं। दृष्टि को अमृत से मीठी लगत हैं और पल-पल घडी-घडीस नई-नई खुसबोए बजूद अपने से छोडते हैं सो अनंत कोट अतरों की लपटे उठती हैं सो अनंत कोट अतरों की लपटे उठती हैं और महकती है। और इस ही पाल पर अनंत कोट नंगन के अनंत कोट पसु पंक्षी नख सिख सिनगार किए हुए फिरत हैं। कोटान कोट हस्थी नंगन के अत्यंत महा छोटे और अत्यंत महा सुंदर और अत्यंत महा मीठे नख सिख

सिनगार किए हुए हौदा (अंबारी) पीठ पर लिए हुए ऊपर पाल के फिरते हैं। और एक छोटी सी जवेर की पुतलियां बीच हौदा के बैठी है। और एक पुतलियां किलाए ऊपर मस्तक के बैठी है सो बीच पाल के दौडावती फिरती हैं। कोऊ पुतलियां हस्थी अपने को ऊपर हादी के झुलावती हैं। कोऊ पुतलियां हस्थी अपने को ऊपर रूहें के दौडाती हैं तब वास्ते आनंद लीला के हक हादी रूहें भागते हैं और संपूरन हस्थी पीछे दौडते हैं।

इन विध से कोई पल नंगन के हस्थियों को खिलाते हैं पीछे हंस के हस्थियों को उठाके समेत जवेर की पुतलियां के छाती से लगाते हैं और चूमत हैं और बडो सुख होत हैं। इन विध से हक हादी रूहें नंगन के हस्थियों से खेलते हैं और छाती से लगाउत हैं। और कोटान कोट नंगन के चंचल चपल अलमस्त घोडे रोम-रोम सिनगार किए हुए हैं। अत्यंत सुंदर और अत्यंत मीठे तिन पर जवेरों की पुतलियां सवार हैं और कोटान कोट घोडे दौडाउती फिरती हैं । और देखे इनों के से हक हादी रूहों को परम सुख होत हैं। कोटान कोट नंगन की पुतलियां ऊपर सुतरों के सवार हैं और सुतरों को चारों तरफ से ऊपर पाल के दौडाउती हैं। तिनके दरसनतें रूहों को बेसुमार हास्य रस पैदा होत हैं। कोटान कोट जवेरों की पुतलियां अत्यंत महा सुंदर मीठे ऊपर रथों के बैठी हैं और ऊपर पाल के चारों तरफ फिरती हैं कोऊ हस्थियों के रथों पर बैठी हैं। कैसे हैं रथ के काहू में एक खंड है, काहू में दो,काहू में तीन, काहू में चार काहू

Nijanand App

में पांच खंड हैं । तिन प्रत्येक खंडों में जवेरन की पुतलियां बैठी हैं। और दो पुतलियां दो हाथियों के मस्तक पर बैठी हैं और अपरम्पार मजा लजत हो रही है। सब्दातीत आनंद बरस रहो है और कोऊ जवेर की पुतलियां ऊपर घोडों के रथों पर बैठी है। कोऊ बैंलो के रथों पर बैठी है, कोऊ सिंहों, सेरों, तिंदुओं, चितों के रथों पर बैठी हैं। कोऊ रोझ, बकर, मृग, मेढों के रथों पर बैठी है, कोऊ वास्ते दरसन हक-हादी रूहों के हार कतार बांधे खडी हैं और साथ आदाब तमासा के मुजरा बजाउती है। और कोटान कोट रथों से उतर के आगूं हक-हादी रूहों के वास्ते नाचनें को खडी होती हैं। और गृदवाय उनोके अनेक बाजे ले-ले के जवेरन की पुतलियां खडी होती हैं और आगूं हक-हादी रूहों के गावती बजावती हैं। अनंत कोट भाव-हाव कटाक्ष बताउती हैं। और हाथ, पांव, नैन नचाउती हैं और दामन हम को पकड-पकड के नांचती हैं। चंद्रवदन कमल नैनी हैं गज गामनी पिक बेनी हैं और नवल-नवल नवेली हैं और अलमस्त अलबेली हैं। कोऊ श्री राज के दामन पकडे हैं, कोऊ श्री श्यामा जी को छोडा पकड के खेंचती हैं और कई विध कटाक्ष करती हैं। और बहुत सुंदर नाजुक हैं। गाउती हैं और बजाउती हैं। और कई विध के रस की तान मारती हैं और हक-हादी रूहों को हैं हक-हादी रूहों को कई विध से रिझावती हैं। जैसे कं चन श्री राज को रिझावते हैं और इस मीठे जादू से नजर नहीं फिरती हैं । फेर-फेर बीच अद्भुत सुख के चेहेवचे में फिसल परती हैं और

खेंची नहीं खिंचती हैं। और रूहों को प्रेमानंद सुख देने के कारन मासूक मीठे तरफ रूहों इसारत करते हैं। और वास्ते दामनगीरी रूहों के शैन करते हैं, तब पुतलियां जवेरन की बेसुमार आदाब कटाक्ष से छेडा रूहों का पकडती है ओर कई विध के गत कटाक्षों से नाचती हैं। हक-हादी हँसते हैं और रूहें विहँसत हैं इन विध से हक-हादी रूहों ने छः घडी आनंद रस लीला करी।

।। जल क्रीडा ।।

तब श्री राज श्री ठकुरानी जी और समस्त सुंदरसाथ ने बस्तर झीलना के पहरे और प्रवेस बीच जल के किया। श्री राज श्री ठकुरानी जी और समस्त सुंदारसाथ कारन जलक्रीडा के ऊपर जल के चबूतरा पर आए ठाढे भए और जलक्रडा करने लगे। इन चबूतरे पर कमर भर ऊंचा जल हैं और आगे वोहोत गहेरा हैं। और पाल ऊपर जो रोसन वन हैं तिनको कोटांन-कोट रोसन डालियां ऊपर जल के लटकत हैं। दोनों घाटों के दरखतों की डालियां जल में एक से दोरी बंध बराबर आए हैं जानो डाल-डाल, पात-पात फूल-फूल फल-फल हाथों से समारे हैं दांए बांए दोरी बंध आगे पीछे दोरी बंध दरखत डाल सिनगार किए हैं और अत्यंत नाजुक नरम कोमल हैं। और पेड से ऊंची उठके जल में लटकती हैं। और पेड मूल में अत्यंत मोटी हैं, और छोरपै अत्यंत पतली और गोलाकृत माखन केसी लगत हैं जानो ए लोंदे माखन की बनाई हैं। सो जल में आसमान लों उछलत हैं। लफत और लहकत हैं। मानिंद बांह सखियों

Nijanand App

के सिनगार किए हैं और मकरीके तार से तोल–तोल बनाई हैं। इन विध से पेड मूल में उतरत छोरपें अत्यंत पतली हुई हैं और तले छोर किनार उसके कई विध के झूमका लटकत हैं। कूं पातन के कहूं फूलन के कहूं फूलन के झूमका लटकत हैं। और कई विध के नंग चित्रामन करके जडित सोभायमान हैं और पात फूल फल ऊपर से तले लों इन विध के बने हैं जैसे हक हादी ने बांह रूह की समारी हावे और बांह समार के तले हाथ में झूमका दिया होवे। कोटान कोट डालें इन विधन की सोभा लेत हैं सो ऐसी कोटान कोट डालीयां दोनों तरफ ऊपर रोसन हैं। जल दूध के लटक रही है और मध्य में कै रंग के कमल फूले हैं और गृदवाय अलझूले हैं और हंस हंसनी विहरत हैं ऐसी जो जमुना जी तिन विषें हक हादी रूहें झीलना करन लगे। एक दूजी को गहेरे जल में ढकेलने लगी और छिट काई झार खेलने लगी। आधी सखी श्री राज के तरफ भई और आधी श्री ठकुरानी जी के तरफ हुई। और तरफ दोनों से जल छांटने लगी। कबहूं श्री राज अपने झुंड की सखीयन सहित भागत फिरत हैं और श्री श्यामा जी लेती जाती हैं और श्री राज जी पीछे उनके परते हैं। और कबहूं श्री राज अकेले रहत हैं और बारों हजार तरफ श्यामा जी के होती है। श्री राज जी इन विध से जल छांटते हैं के संपूरन सखी पाल को भागती है। और संपूरन सखी कबहूं तरफ श्री राज के होती हैं और श्री श्यामा जी अकेली रहती हैं इन विध का जल छांटती हैं के श्री राज सहित संपूरन साथ किनार को भागत

फिरत हैं और श्री श्यामा जी लेती फिरती हैं। और कबहूं श्री राज जल में भागत हैं श्री श्यामा जी पाछें लगत हैं। पीछे श्यामा जी के बारौं हजार पेरती हैं सो श्री राज को श्यामा नहीं पाउती हैं और श्यामा जी को साथ नहीं छू पाता हैं फेर जब श्यामा जी सुंदरसाथ ने श्री राज को दूर देखे तब निरास होकर फिरी। सोई श्री राज ने पीछे से गोता मारा और तले ही तले जल में आय के श्यामा जी को चरन छू गए। और काहु को चरन पकड के तले को खेंचत हैं और काहूं को कोनहुं अंग काहूं कोनहूं अंग छू जाते हैं और कोऊ पकर नहीं पाउत हैं। कबहूं श्यामा जी सुंदरसाथ को श्री राज तरफ पूर्व के दिखाई देत हैं, तहां श्यामा जी सुंदरसाथ दौडत हैं, तब तहां डुबकैया लेके पीछे पाछे तरफ पश्चिम की दिखाई देते हैं। तब श्यामा जी सुंदरसाथ तरफ पश्चिम के दौडते हैं, तब आप तरफ दक्षिण के उछरते हैं। जब आप दक्षिण में दिखाई देत हैं तब रूहें श्यामा जी तरफ दक्षिण के दौडती हैं तब वहां के बूड के उत्तर में देखाई देत हैं तब संपूरन साथ चार गिरोह में होकर तरफ चारहूं दौडती हैं तब आप संपूरन साथ के मध्य में उझकैयां देत हैं। और जब मध्य को दौडती हैं तब आप जल के किनारे देखाई देत हैं। कबहूं दरखतों की चोट चढके कूदत हैं तिनके पाछे श्री ठकुरानी जी कूदती हैं। तिनके पीछे बारहौं हजार सुंदरसाथ कूदत हैं और बहुत बडा मजा होत हैं। कबहूं राज श्यामा जी सुंदरसाथ ऊपर जल के दौडत हैं। कबहूं जल में दूर–दूर जात हैं। कबहूं जहाज पर बैठ के श्री जमुना जी में जहाज

Nijanand App

दौडावत फिरत हैं। और कबहूं न्यारे-न्यारे सतेसों पर बैठ के दौडावत फिरत हैं और बडी सोभा लेत हैं। और कबहूं मगरमच्छ कच्छ सर्पो पर बैठत हैं और जल में दौडावत हैं। और कबहूं पीडी, पनडुबी जल कुकरियों पर बैठत हैं। और भी कोई अनेक विध के जल जानवर और पछियों पर बैठते हैं और अनेक विथसों जलक्रीडा करत हैं। और रूहौ को सुख देत हैं। इन विध बीच क्रीडा के एक घडी वितीत करत हैं।

।। सायंकाल का सिनगार ।।

पीछे एक घडी के राज श्यामा सुंदरसाथ जी ऊपर पाल के सो चित चाहे नवल सिनगार करत हैं। और चार सखी श्री राज जी को और चार सखी श्री श्यामा जी को सिनगार करती हैं और बीच-बीच में श्री श्यामा महारानी को आप सिनगार करावते हैं। श्यामा महारानी भी बीच-बीच में श्री राज को सिनगार करावती हैं और अपने हाथों बीडा मुख में देती हैं और बीडा मुख में देके बोसा मुख को लेती हैं। और राज भी बीच मुख श्यामा जी निज हाथों बीडा देते हैं, और बीडा मुख में देके मुख को चूम लेते हैं, और परस्पर दोऊ महा आनंद लेत हैं और साथ सकल मिनो मिने सिनगार करत हैं । सो श्री राज श्री ठकुरानी जी संध्या के समें सिनगार कर तैयार होत हैं। और तरफ श्री रंगभवन के मुतवज्हे हुए। सोई संपूरन फौजों में खलभल पडी, सुंदर नूर के सुखपाल छः हजार और एक आय के आगे खडे भए, और चरन कमल की स्पर्स को, बेकल

होने लगे। और फौजे संपूरन तैयार खडे होके राह पग उठने की देखने लगे।

श्री राज ठकुरानी जी सुंदरसाथ ने दोनों कदम मुबारक अपने उठाय के बीच सुखपाल के धरे सोई अनंत कोट बाजे एक ही बार बजने लगे। कोटांन कोट बंदरों ने और कोटान कोट लंगूरों ने और कोटान कोट रोझों ने कोटान कोट हाथियों की नोबतों पर, और कोटान कोट सुतरों के नगारों पर एक ही बार चोट मारी । तिन धोसों की धुसार से जिमीन आसमान भराय रहो। कोटान कोट बंदर झालरें बजावते चले, कोटान कोट रींछ शंख फूकते चले जाते हैं। कोटान कोट लंगूर लग्गी हाथों में लिए हैं और बजाते चले जाते हैं और हास्य उठाने वाली पोसाकें किए हैं । कोटान कोट बंदर रींछ लंगूर, कोटान कोट रंगों की सरई पेहेनें हैं। कोटान कोट रंगों के बागे पेहेनें हैं और कोटान कोट रंगों की टोपियां सिर में दिए हैं। कोटान कोट हस्थियों पर दो-दो रींछ बैठे हैं एक नोबत बजाते हैं, एके ऊपर किलाए के बैठे-बैठे हस्थी को चलाते हैं। और अक्षरातीत भरतारनें प्रथम सुखपाल ऊँचे आसमान को उठाए और तरफ चारहूँ नजर के फेरी पीछली तरफ हेरे तो अक्षर ब्रह्म बीच चांदनी चोक अपने के सहित लक्ष्मी सखी खूब खुसालियों के खडे हैं। जोई नजर मासूक मीठे की ऊपर अक्षर लक्ष्मी खूब खुसालियों के पडी सोई सबों ने सेजदा बजाया। और संजीव जीवनी पीया और मूर संजीवन चाखी अष्ट प्रहर को अलमस्त भए । अक्षरातीत मासूक ने चारों

Nijanand App

तरफ नजर करके सुखपाल को तरफ रंग महल के चलाये ।

।। अक्षरातीत की आदर्श सवारी ।।

अब श्री अक्षरातीत दसहूं दिसन की खूबी मजा लजत देखते चले जाते हैं आगे अनंत कोट खूब खुसालियां गावती बजावती नाचती चली जाती है। तिनसों लग के पांच दिस विषे अनंत कोट पंछी चले जाते हैं। और तले सुखपालों के अनंत कोट पसु चले जाते हैं और हर एक पंछी अनंत कोट वेद पढता है। मासूक पूरन ब्रह्म के अनंत कोट नाम लेत हैं सो नया-नया नाम लेत है और पूरन ब्रह्म की अनंत कोट गुन सिफत जानता है। और रात दिन चौंसठ घडी कोटान कोट जुवानों से बयान करता है। रात दिन चौंसठ घडी बीच मारफत इस्क के गरक रहत है। बीच छब हुस्न हक हादी रूहों के आठ पहर चौंसठ घडी रोम-रोम मग्न होत है। और एक-एक रोंम जिनके कोट-कोट सूर्ज से रोसन हैं। और पंछियों में से एक छोटा पंछी जो चिडियां है सो जैसा यह एक ब्रह्मांड हैं ऐसे अनंत-अनंत कोट ब्रह्मांड को अपने परों के बाओ से तोड देत हैं। मानिंद बलबूतों के फोड देवे, एक छोटी चिडिया ऐसा तेज बल रखती है। और तले जो पसु चले जाते हैं सो अत्यंत महा पेहेलवान हैं और कोटान कोट झूंड सिंहों के चले जाते हैं, कोटान कोट झूंड बाधों के चले जाते हैं, कोटान कोट झूंड तिंदुओं के चले जाते हैं और चितों के चले जाते हैं। और गरजना करते हैं। तिनकी गर्जना की आवाज धुकार से आसमान जमीन गरजत है। पहाड परवत गरजत है, और

पडघा उठत है। मीठो-मीठो प्रथ्वी पर्वतों में सोभाय रहत है। कोटान कोट सिंह बाघ तिदुएं चीते जुगल-जुगल मिल के ऊपर सिर अपने के वास्ते हक हादी रूहों के सेवा रथों की लिए हैं। कोटान कोट हाथी वास्ते हक हादी रूहों के सिनगार किए हैं। सहित अंबारी हौदा के कोतल चले जाते हैं। कोटान कोट हस्थियों के ऊपर दोय-दोय बंदर बैठे हैं और पोसाक किए हुए हैं। और एक बंदर निसान को साधे हैं और किलाए बैठा-बैठा हस्थी को चलाता है। नजर दोनों अक्षरातीत से बांधे हैं और कोटान कोट रींछ ऊपर सुतरों के बैठे हैं नगारे बजाते चले जाते हैं। औरकोटान बंदर ऊपर घोडों के सवार हैं और नगारे बजाते चले जाते हैं। और कोटान कोट बंदर ऊपर घोडों के निसान लिए चले जाते हैं! और कोटान कोट रींछ ऊपर हाथियों के बुलंद झाझे बजाते जाते हैं। और कोटान कोट लंगूर ऊपर घोडों के बैठे हुए तुरही रनसिंहा, करनाल बजाते हैं। और कोटान कोट बंदर ऊपर घोडों के बैठे हुए खमाइचे बजाते चले जाते हैं। और कोटान कोट बीना, रबाब को छेडते और कोटान कोट बंदर छडियां लिए हुए नांचते चले जाते हैं। और कोटान कोट बंदर मृदंग गले में डाले हुए बजाते चले जाते हैं। और कोटान कोट बंदर अनंत बाजें बजाते चले जाते हैं। और कोटान कोट घोडे सिनगार किए हुए कोतल चले जाते हैं। और कोटान कोट संगीतों साध के निर्त करते चले जाते हैं और माफक गांन के निर्त करते हैं। और कोटान कोट धजा पताका निसान, बंदर रींछ लंगूर जमीन पर

Nijanand App

लिए जात हैं सो अनंत फौजों में अनंत कोट रंगों के धजा पताका निसान फहरात है। अनंत कोट विध के पसू पंछी हैं, और पसू पंछियों में अनंत कोट जाते हैं। और जात के पसू पंछियों के अनंत कोट झुंड हैं तिन एक-एक झुंड में कोटान कोट पसू पंछी हैं सो एक-एक जिनस के जानवरों में अनंत कोट झुंड हैं तिन हर एक झुंड में न्यारे-न्यारे रंगों के निसान धजा पताका फहरात हैं। और जात-जात के जानवर अपनी ही जात मैं चले जात हैं कोऊ मरजाद जात अपनी को नहीं छोडते हैं। और हर एक जात के जानवर हैं तिनकी फौज के दांए-बांए आगे पीछे और मध्य में पांच बंदर चले जाते हैं सो उस जिनस के जानवरों की कोटान कोट फौज हैं। तिस एक-एक फौज में से कोई एकजानवर नख पग अपने को हार कतार अपनी से बाहिर रखें तो ताही छिन बीच नख उसके बंदर छडी मारे और अदब-अदब बोलें ऐसे अनंत कोट बंदर छडियां लिए हुए हैं ऊपर घोडों के सवार है और अबद-अबद करते जाते हैं। और कोटान कोट छडियां लिए हुए और पोसाक पेहेने हुए जिमीन पर चले जाते हैं। और कोट रींछ नाचते चले जाते हैं । आस पास उनके बंदर लंगूर बाजे बजाते जाते हैं। और कई विध से पग निर्त में कट छाती हाथ अंगुलियां मुख नासिका भौंहें नैन सिर को नचाते हैं। और जिन विध से हक हादी रूहें अट्टाहास्य करें इन विध से सब अंग मटकाते हैं और दर दिबाल को हंसाते हैं।

अब अनंत कोट जवेरन की पुतलियां चली जाती है सो

कोटान कोट हस्थयों पर चढी हैं, कोटान कोट जवेरों की पुतलियां एक खंड रथों पर बैठी है, और कोटान कोट दो खंडा, कोटान कोट तिखंडा, चौ खंडा, कोटान कोट हस्थियों के पच खंडा रथों पर चढी है। और दो पुतलियां दो हाथों के किलाए-किलाए बैठी है और चली जाती है। और कोटान कोट जवेरों की पुतलियां दो घोडे के रथ पर चली जाती है। और कोटान कोट जवेरों की पुतलियां इका घोडे के रथ पर चली जाती हैं। कोटान कोट जवेरों की पुतलियां ऊपर रथ बैलों सिंहों तिदुओं चीतों रोझों बकरों मृग मेढों के चढी हैं। और मानिंद कंचनियों के कोटान कोट झुंड चले जाते हैं। कोटान कोट जवेरों की पुतलियां तले जिमीन पर नांचती गाउती बजाउती चली जाती है। कोटान कोट जवेरों की पुतलियां ऊपर घोडों के बैठी हैं और कई विध से नचाउती जाती हैं । और अनंत कोट फौजों में अपार सोभा लेती हैं। इन विध से सैना फौजें अक्षरातीत की संपूरन जिमीन आसमान में छाय रहत है और मानिंद कोटों सहरों लसकरों इकट्ठे के सोरसराबा धमसांन घमंड होता है। इन विधि से अक्षरातीत पूरन ब्रह्म मासूक दसहूं दिसन को तमासा देखते-देखते और सर्व को हंसाउते रमाउते खिलाउते और सबको नैन सैन दीदार देते-देते और सर्व को मुजरा लेते-लेते चाँदनी चौक में सुखपाल ऊतारे।

Nijanand App

।। आज्ञा ।।

और हक हादी रूहें सुखपालों से उतर और सुखपालों को छठी भोम पधारवे की आज्ञा दई। और खूब खुसालियों को बंगलों की आज्ञा हुई। और जवेरों की पुतलियों को हवेलियां मोहोल मंदिरों की आज्ञा हुई। और पसु पंछियों को बन बगीचों के भोमों की आज्ञा भई सो आप अपने ठिकानें पधारे।

अब चांदनी चौक में कमर भर ऊँचे हीरे के दो चबूतरे हैं, तिन पर लाल तरफ उतर के और हरा वृक्ष तरफ दक्षिण के हैं सो भोम भर ऊंचे में तेतीस मंदिर का लंबा चौडा मानिंद मंदिर के मंडल बांधा है। और पत्र-पत्र में से किरनें छूटी हैं सो दसहूं दिसन को चली जात हैं। और कोटान कोट किरनें आसमान को लगी हैं सो जाछिन पवन करके डाल फल फूल पात हलते हैं तब कोटान कोट जोति किरनें आसमान की जिमीन को लगती हैं और जिमीन की आसमान को जाती हैं। और बहुत सुंदर मीठा तमासा होत है सो हक हादी रूहें तमासा जोति किरनों का देखते हुए श्री रंग भवन की सौ सीढी बीस चांदे चढते बडे मेहेराबी दरवाजे में होके, दो मंदिर का चौक मझियाय के कमाडी दरवाजे में होके आगे मंदिर दरवाजे को मझाय के श्री राज श्री ठकुरानी जी बीच चौक रसोई हवेली के दाखिल हुए।

।। चौथा प्रहर की भोजन लीला ।।

श्री राज श्री ठकुरानी जी वास्ते आरोगनें की बीच के चबुतरे के ऊपर चाकले के विराजे। और संपुरन सखियों की पाँती बैठी श्री लाडबाई आपने झुंड सहित ऊपर परसने के ठाडी हुई और महा उछरंग उमंग से सकल सामग्री ल्याई श्री राज श्री ठकुरानी जी ने परम हित सनेह सों सकल सामग्री पाई और बीच-बीच में कई बेर सखियों को हंसाई। और फेर-फेर चित चाही सामग्री मगाई और महा आनंद में पाई। और सकल साथ ने चित चाहे सकल पकवान व्यंजन भोग लगाए। और मासूक ने बीच-बीच में सर्व साथ को हंसाए। पीछे एक सखिनें कंचन रंग झारी लेके जुगल सरुप को अचवाये। दूसरी सखी ने दो बीडा अरुगाए और साथ सकल ने आरोगन के और अचवन करके हाथ जुगल किसोर केसे बीडा बारा हजार पाए और चारों चरन लैनों से लगाए। कोटान कोट उछरंगों से और आनंद उमंगों से तरफ निरत की हवेली के पधारे। श्याम सेत मंदिर के बीच में जो मंदिर है तिस मंदिर से सीढियां सुंदर सोभित है। सो हर सीढी हर रंग की है सो हक हादी रूहों को संग लेके पेहेली भोम से दूसरी भोम आई, दूसरी भोम से तीसरी भोम आए, तीसरी भोम से चौथी भोम आए ।

।। चौथी भोम ।।

चौथी भोम में जो निर्त की हवेली है तहां आए के रोसन को रोसन किया और सोभा को सोभा बख्सी और आनंद को आनंद

Nijanand App

बकसत भए। और मिठाई में अत्यंत मीठी मिठाई हादी रूहों को खिलावत भए। और निर्त की दिल में लेके श्री नवरंगबाई की तरफ चितवन भए। श्री नवरंगबाई ने सहित ३०० सखी के बागो निर्त को पहेरो और सिनगार नृत्य के पेहेनें और आपने बाजे समारनें लगी। और श्री नवरंगबाई को आदि दे संपूरन सखी बीच जोस के आई। और सुंदर मासूक के सिझावने की उछरंग-उमंग-अंग में भराय रही।

अब नितर की जो हवेली है ताके तीन तरफ बीस-बीस मंदिर है। और पूर्व की तरफ बीस मंदिर की एक देहेलान है तामें बीस-बीस थंभन की दोय हारें हैं। और एक हार थंभन की साठ मंदिर और देहेलान के बाहिर फिरी है। और एक हार थंभन की साठ मंदिर और देहेलान के भीतरी तरफ फिरी है। मंदिर मंदिर के बीच से और भीतरी हार से मंदिर भर जागा छोड के सुंदर चौखुटों चबूतरा कमर भर ऊँचों चारों तरफ तीन-तीन सीढी है। और एक हार थंभन की चबूतरा के किनारे हैं। और चबूतरे पर चौखुंटी रोसन गिलम बिछी है और हाथ-हाथ भर पसम भरी है बैठिए तो बैठ जाए और उठिए तो उठ खडी होवे। और थंभ-थंभ को तकिए बिराजत है। और दरवाजे चारहूं दिसन में रोसन हैं, आगे सीढियां सोभित हैं। और सत्रा-सत्रा थंभ को कठेडा सोभायमान है गृदवाए नंगन की सुंदर झालर झलकत हैं। पछिम के दरवाजे के आगे सिंहासन मासूक का रख्या है ताकी कंचन रंग जिमीन है। अनेक रंगों के नंगों का

जडाव जडा है छः रंगों के तले छः पाईये हैं और ऊपर छः डाडे के अनेक रंग हैं। और छः डाडों के ऊपर नूर की दो छत्रियां हैं तिनमें अनंत नकस कटाव हैं। और तले आगे सिंहासन के फिरती जवेरों से जडी दो चौकियां धरी हैं। तिन दोनों चौकियों के ऊपर श्री राज श्री ठकुरानी जी चारों कदम धर के विराजमान भए। सिंहासन के भीतर एक गादी दोय चाकले हैं और पांच तकिए धरे हैं। ऊपर सिर श्री राज श्यामा जी के दो फूल जवेरों के लटकत हैं। और छत्रों के चारौं तरफौं किनारे झालर मोती मानक और कई रतनों की लटकत है। ऐसा रोसन नंगों से झिलमिल जो सिंहासन है तिनके भीतर दोऊ झिलमिलिया साहिब बैठे हैं। और तले रंगा रंग जोती कि गिलम झिलमिल है। और गृदवाय सिंहासन के सुंदर मीठी रूहें झिलमिल है। और ऊपर चन्द्रवा नूर को झिलमिल है और गृदवाय अडसठ थंभ दगदगात हैं। और दो मंदिर भर चल के पूर्व की तरफ नीले थंभ जगममात है और पछिम की तरफ पीली पुखराजी नंग की दिवाल झलकत है। और साम-सामी जोति वरजिद लडती हैं नीली जोति सेत जोति से और सेत जोति नीली से। और पीली जोति लाल से और लाल जोति पीली से और लाल गिलम की जोति हरे चंद्रवा से और हरे चंद्रवा की जोति लाल गिलम से लडत हैं। और हक-हादी रूहों के मुख कलम की जोति दसहूं दिस की जोतिन सों लरत हैं सो हक-हादी रूहें तरफ पछिम के पीठ करके तरफ पूर्व के मुखरविंद कर विराजे। और श्री नवरंगबाई तीनसय सखी को संग लेके पूर्व

Nijanand App

को पीठ देके सनमुख हक मासूक के खडी हुई।

श्री नवरंगबाई कैसी है कि श्री राज श्री ठकुरानी जी को अत्यंत महाप्यारी हैं और श्यामा महारानी की लाडली हैं और श्री श्यामा महारानी की सिखाई पढाईल हैं हक बसी करने और हक मन मोहन जादू सिखाए हैं। और श्री नवरंगबाई कैसी है कि चितवन में जादू करती है और बसी करन को मूरति है। और बचनों में टोना डारती है और बिनही तरवारें मुतलक मारती है और काम सिंध की हलानें वाली काम तरंगिनी मूरति हैं। और अत्यंत महा सुंदर मीठी नाजुक सूरति है और पांउ तली से चोटीलों अत्यन्त सुंदर मीठे सिनगार किए हैं। निर्त के वस्तर भूषन पेहेने हैं।

।। नृत्य लीला ।।

सो सहित तीन से सखी के ऊपर गानें-नाचनें बजाने के मुस्तैद हुई। कोई सखी मृदंग बजानें लगी, कोऊ सखी तरफ दोनों से डोरे खमायचों के खेंचने लगी,कोऊ सखी झरमरी अमृती बजावने लगी,कोऊ सखी चंग जल तरंग को बजावनें लगी,कोऊ सखी डोरु मुर्चंग मंजीरा बजावती है, कोऊ सखी श्री मंडल षटतालें बजाउती है, कोऊ बांसुरी अलगोजों सहनाईयों को फूकती है और साम-सामी एक दूसरे से मिलती है, कोऊ सखी तबला तंबूररा बजावती है। इन विध से और भि अनेक बाजे बजावती हैं और अनेक विधसों गाउती हैं।

प्रथम केलबाई अलापचारी करती है,पीछे उनके सेनबाई

सुर को पूरती है, मृदंगबाई प्रथम आवाज मृदंग की करति है, और हाथ कसव का ऊपर मृदंग के मारती है,तब ही हृदय सबन के हुलसत है,और उछरंग उमंग अंग में आवेस आवत है। श्री नवरंगबाई जब ऊंचा स्वर अलापती है, तब दोंनो तरफ से खेंचे जो डोरे खमायचों के हैं, तब दोनों तरफ से खेंचे जो डोरे खमायचों के हैं, सो नवरंगबाई के स्वर से मिल जात है, एक ही आवाज दरसत है।

अब कुल स्वर मृगंगों के हुए, इन विध से कुल स्वर कुल बाजों के एक हुए। सो संपूरन स्वर मिल के नवरंगबाई के स्वर में मिल गए। सबको उतार चढाव और और अस्थाई भाव ताल सुर तान एक हुई। संपूरन भूषनों के स्वर एक हुए, संपूरन राग को एक मंडल बंध रहा। गृदवाय चबूतरे के नगन के पसु पंखी और नगन की पुतलियां गाती-बजाती नाचती है। तिनका गावनां बजाउनां नाचना भी श्री नवरंगबाई के गाउने बजाउने नांचने में मिल गया, एक स्वर को मंडल छाये रहो। संपूरन निजधाम में अमृततें मीठी एक स्वर की दोरी खींच रही। और दसहूं दिस विषें तता थेई-थेईकार हो रहो। पसु-पंखी जवेरों की पुतलियां जो तमासे देखने वाले थे और थंभ दिवालों से टिके थे सामे आप अपने सरुप को भूल के और तता थेई-थेई में तन्मय होके उनमत होके हलवन-चलवन करने लगे, और तता थेइ-थेइ नाचने लगे। दर दिवाल मंदिर थंभ छक रहे, चोक चबूतरे छक रहे, गिलम कठेडा तकिए चंद्रवा छक रहे, और सुरानंद में मग्न भए। तब राज श्यामा जी

Nijanand App

सखियों के मग्नता कहा कहिए। श्री नवरंगबाई अनंत विध के तमासे करती है और अनंत विध की गतें भरती है । अनंत विध की छबें ल्याउती है, और अनंत विध की झांकी दिखावती है। अनंत विध के भाव बतावती है, और अकह अगम कटाक्ष करती है। अत्यंत मीहीन से मीहीन और मुस्किल से मुस्किल कमाल पर कमाल कसव करती है। झांझरी घूंघरी कांवी कडला अनवट विछिया बजावती है और अत्यंत मीठे स्वर कीलती है। ऐसे हुनर से पांउ चलावती है। कई अनेक घूंघरियों में से एक ही घूंघरी हलती है। जब दो घूंघरी बजाया चाहती है तब तैसा ही पांउ चलावती है। पुतलियाँ कांबी की गावती है और नैन चलावती है और पग ही में भाव बतावती है। जोन झांझरी कडला अनवट विछियां मीठे स्वर बोलत है। जोन राग श्री नवरंगबाई गाउती है, माफक उसी के स्वर पूरत है भूषन हाथ पांउ कंठ श्रवन नासिका सीस के संपूरन गान करती है,और माफक राग रागनियों से स्वर भरते हैं। श्री नवरंगबाई तान माफक तान तोडते हैं और संपूरन जुदे -जुदे स्वर बोलते हैं। श्री नवरंगबाई तिल-तिल तन नचाउती है, और रग रग फरकाउती है,और अंग-अंग मटकाउती है,अत्यंत रस रंग मचाउती है, दुध के सिंध भराउती है और रस की नदियां बहावती है और जो कछु मुख से गाउती है ताही को भाव बतावती हैं और साक्षात दरसन करावती है। जिस राग की अलाप चारी करती है, वह राग सहित कुटंग-परिवार के सिनगार करके मूरतवंत आय खडा होत है। और सरुप

गुन अपने से ब्रह्मांड को आवरन करता है,और श्री नवरंगबाई बीच रागों के संपूरन जानवरों की बोलियां बोलती है, और संपूरन जानवरों की नकले गतें भेष ल्यावती है। श्री राज श्री ठकुरानी जी सुंदरसाथ को बेसुमार हंसावती है और रिझावती है।

अब बीच हुस्न विध्या श्री नवरंगबाई के श्री राज श्री ठकुरानी जी सुंदरसाथ सहित मस्त हुए। और मानिंद मतवारे मतंग हस्थि के धूमने और झंमने लगे, फेर-फेर आलिंघन कर-कर मुख कमल चूंमने लगे। और पसु-पंखी और जवेर की पुतलियां बीच हाल नूरजमाल के ऐसी मस्त हुई के गृदवाय चबूतरे के नांचती कूदती फिरती है। गिलम कठेडा चंद्रवा चौक चबूतरे थंभ मस्त हुए, और चौकी सिंहासन मस्त हुए। बीच प्रेमचंद के मग्न होय रहे। श्री राज श्री ठकुरानी जी सहित समस्त सुंदरसाथ के,श्री नवरंगबाई सहित ३०० सखी के दसहूं दिस विषें प्रति विबिंत है। जहां देखिए तहां श्री राज श्री ठकुरानी जी साथ सहित बैठे हैं। आगे श्री नवरंगबाई निरत करती है। गिलम चंद्रवा चौकी सिंहासन मंदिर थंभ कठेडा विषें सहित श्री नवरंगबाई के श्री राज श्री ठकुरानी जी झिलमिलात हैं। दसहुँ दिसन विषें अमृत से कोट गुनें मिठे राग स्वर के डोरे खिचे है। पल-पल छिन-छिन मिश्री से कोट गुनी मीठी तान टूटन है। और बाहिर बीच हर चीज के दसहुँ दिस विषें श्री राज श्री ठकुरानी जी झिलमिलात हैं सो दृष्टि श्रवन रुहों के दो रुप सुख सिंधु मासूक कैसे आठ पहर चौंसठ घडी मानिंद मछली के बाहिर नहीं आते हैं।

Nijanand App

।। शयन लीला ।।

अब इन विध से चौथी भोम निर्त की हवेली में रात पहर भर बीती। पीछे श्री राज श्री ठकुरानी जी ने श्री नवरंगबाई को अंक भर के और बोसा ऊपर लवों के मार के बीडा मुख में खवाई और आज्ञा सेंन मंदिर की करी। और संपूरन रुहों को बीडा दई,और इसारत सेन मंदिर की करी। बीसेक सखी संग श्री राज श्री ठकुरनी जी के रेहे गई । और संपूरन सखी सूरत श्रीराज श्री ठकुरनी जी की रोंम-रोंम दिल में लेके,और छाती अधर गाल नैंन चरन कमल से, मल-मल के सखी संपूरन ाप अपने मंदिरों पधारी। श्री राज श्री ठकुरानी दोनों चरन ऊपर चौकी के धरके बीच सुखसेज्या के पौठे। बीसहूँ सखी छाती अधर गाल-नैन श्री राज श्री ठकुरानी जी के कदमों से मल-मल के आप अपने मंदिरों पधारी,और श्री राज जी बांरौं हजार मंदिरों पधारे ।

अब श्री राज हमेसा-हमेस साथ दो सरूप के लीला करत है। एक अद्वैत दूजो अनंत, सो पांच पहर अद्वैत सरुप से लीला करते हैं और पांच पहर पीछे जोई श्री श्यामा जी की सेज पर पग धारे, सोई अनंत रुपा होय गए। खूब खुसालियां जवेरों की पुतलियां पसु-पंखी बन-बगीचे मोहोल मंदिर और जेते जल-थल के जीव हैं जो जैसे जिनसे रुप है तिनही के रुप माफक रुप धारके सबही की सेज पर पधारे। सबही जड चैतन्यनें श्री राज जी को संग अपने देखे, और बारौं हजार निज दुलहिनों को ऊपर सेज के लेके,सब अंगो-

अंग मिलाय के बीच रती रसानंद सिंध में डुबाई। सो तीन पहरलों अपने निज सरुप पर आतम को भूलते भई। जब बडे प्रात जीव जीवन जी छाती से जुदे हुए तब फेर अपने पर आतम सरुप में आई। रति रसानंद की निंद्रा जाग्रत आग्या पाई सो आप अपने मंदिरों से बजाउती गाउती नाचती हुई फेर गृद चौक परवाली रंग मंदिर के दाखिल भई। श्री राज श्री ठकुरानी जी को रति रसानंद निद्रा से अनेक रस तरंगन जगाउती है,फेर वहीं प्रेमानंद लीला करन लगी। सो यह हमेसा-हमेस संपूरन पारब्रह्म अक्षरातीत की अनादि वृति हैं। हमेसा-हमेस आठ पहर चौंसठ घडी इन विध से व्रतमान होत रहत है।

श्री रंगभवन से बाहेर परमधाम में अनंत कोट हवेलियां हैं, अनंत कोट बाग-बगीचे हैं।अनंत रंग फूल फूले हैं,अनंत रंग के पसू पंखी धूमते हैं,अनंता अनंत रस स्वादों की नदियां बहती हैं । अनंत ताल कुंड हौज-कूप-बावडी हैं। तिहां हर हवेली की जोगवाई न्यारी-न्यारी है,हर हवेली में कोटान कोट बगीचे हैं,हर हवेली में कोटान कोट खंड भोमें हैं,हर हवेली में कोटान कोट कोज नदियां-ताल हौज कुंड बावडी हैं। हर हवेली में कोटान कोट पसु-पंखी हैं। और हवेली में कोटान कोट जवेरों की पुतलियां हैं,और हर हवेली में पसु-पंखी और जवेरों की कोटान कोट फौजे हैं, और हर हवेली में मानिंद कोटान कोट सहरों, लसकरों इकट्ठे गुल चोहो चांद सोर-सराबा हैं। इन विध से सकल हवेलियों में और सकल

Nijanand App

परमधाम में पूरन आवादानगी है। सर्व को पूरन सुख और पूरन इस्क है। सब पूरन चैतन्य पूरन जागृत पूरन ग्यानी है, और पूरन अभंग ध्यानी हैं।

।। संसार आत्तर्बन।।

अब ऐसे निजधाम को छोड के रुहन को इस असत जड और दुखरुपी माया में आउने परो,ताको कारन कहत हैं के रुहों बारा हजार जो थी, आठ पहर चौंसठ धडी बीच दरिया हुस्न और इस्क के गरकाव थी ऐसी जैसे लक्षकोस ऊंचे और लक्षकोस नीचे और लक्षकोस आगे पाछे दांए बांए जल भरा होवे और मध्य में एक छोटी सी मछरी फिरे,ऐसे रुहें बारे हजार बीच दरिया हुस्न-इस्क के रहती थी। इनको सिवाय एक के दूसरी बस्तु की खबर न हती । सो हक ने दिल में लई के मैं इनको माया द्वैत दिखाऊं। माया द्वैत दिखाए के जेता की इनको इस्क स्वाद सुख पेहेचान हाल हैं। इससे कोट गुना बठाऊं। ऐसी बात दिल में लेके रुहन के दिल में उपराजी तो हादी रुहें इस्क की रबद करने लगी, के हे हक हादी जो हम आसिक हैं और तुम दोऊ हक हादी हमारे मासूक हो,और मैं तुम दोनों की आसिक हौं। तब हकने हादी रुहों से कहा के तुम जो दोनों कहती हो,सो भले कहती हो,पर तुम हादी रुहों मेरे मासूक हो,और मैं तुम दोनों का आसिक हूँ।

इन विध से रब्द होते बहुत मुदत बीती। दम-दम धडी-धडी जब हक अपनी कहे,तब हादी अपनी बोली। जब हादी अपनी

बोली तब रुहें अपनी बोले। इन विध से रब्द कुछ मुद्दत में मानिंद कमान के चढी। तब हक ने दिल में लई के अब में इनको दिखाऊं और इस परमधाम की रीत रसम से बरजिद जो माया है ताहि दिखाऊं। ताही समें अक्षर ब्रह्म मुजरे को आए,ताहि छिन हक ने रुहन के दिल में उपजाई। सो रुहें पूरन ब्रह्म को पूछने लगी,हे मासूक जी! ए जो नित प्रत मुजरे को आवत हैं,सो ए कौन है,और इनका क्या नाम हैं और ए कौन लीला करत हैं। तब श्री राज जी ने कही के ए मेरी ही अंग है। इनको अक्षर ब्रह्म नाम है और अपने धाम में बाल लीला करत रहत हैं। दुख रुपी सुपन सरुपी पाव पल में अनंत कोट ब्रह्मांड उपजावत खिपावत हैं। ऐसो वचनसुन के सखी संपूरन तालियां देके हंसी,और कही के हमनें तुमको बहुत दिनन में पकडया हैं। अब हमारो इस्क ज्यादा ठहरो। तब रुहों ने कह्या के जो आसिक होत हैं,सो मासूक से कछू छिपावत नाही है। सो आपके छिपाव से हम जानी के हम आसिक हैं और तुम हमारे मासूक हो,तब हक ने कह्या हे रुह जी! मैंने तुमसे कुछ छिपाया नहीं है। और वह खेल जो तुमको मैंने नहीं दिखालाया है, सो इस वास्ते के वह खेल देखने लायक तुमारे नहीं है। दुख है और महा दुख है। यह इस्क तुमारो बीच उस खेल के उड जायगा। मुझे और आपको इस परमधाम को भी मुतलक भूल जावोगी। ऐसी बात सुन के रुहों को कोट गुना उमंग उछरंग पैदा हुआ और कही के हे मासूक जी! जिस खेल में हम तुमको और आपको और अपने घर को भूल

Nijanand App

जावे। ऐसा खेल हमको अलवत्त देखाईए,और हम सौ वेर की बात एक ही बेर कहे देत हैं के आप हमको कोट माया दिखाओ परंत ना तो हम तुमको भूल हैं और न आप घर को। इस बात की सरत में पीछे आप ही सरमिंदा होऊंगे,तब हक ने कहा के हे रुह जी! तुम उस खेल में अलबत भूल जाओगे। और उस खेल में तुमको झूठे माता-पिता स्त्री पुत्र कुटम कबीला मिलेगा तासों ऐसा सनेह लगेगा के तुम सुपने में भी मेरी याद न करोगे। जब ऐसी बात हक की सुनी तब रुहें संपूरन वास्ते खेल के बेकल बेकरार हुई और दामन हक का झटका के खसम हमारे ऐसा खेल हमको आजहूं दिखलाईए । तब हक ने कह्या ए रुह जी! तुम आपसु में खबरदार हो जाओ और मैं तुमको खेल भूल का दिखाता हूँ, उस खेल में तुम भूल जाओगे। तब मैं कारण तुमारे पाती लिखकर रसूल को भेजोगा। और उस पाती में अपनी और तुमारी बीतक लिखोंगा, सो बीतक कोई न जान पावेगा। तिस पाछे अपनी आत्मा को बीतक मोहोल की कुंजी रुह अल्लाह के हाथ देके रुह अल्लाह को भेजोंगा। तिसके पीछे इमाम मेहेदी रुप घर के मैं आउंगा,सो तुमको उस खेल से जगाऊंगा,और इलम से चैतन्य कर खेल दिखाऊंगा। तिस पीछे परमधाम में उठाऊंगा और तीन ब्रह्मांड दिखाऊंगा। श्री राज ने अक्षर ब्रह्म के दिल में उपजाई सो अक्षरब्रह्म को इच्छा उपजौ के श्री राज जी हादी रुहों से कैसा प्यार रखती हैं। और में दरसन रुहों को पाऊं। ऐसी विध सो जब साम सामी मनोरथ प्रगटे। तब श्री राज जी सखियन को लेके

तिसरी भोम से चार घडी दिन रहे तले की भोंम में मूल मिलावे में आन बैठे। तीसरे पहर से चार घडी दिन रहेलों रब्द भई।

।। मूल मिलावा।।

अब मूल मिलावे का चबूतरा कैसा है के चौंसठ मंदिर की गृद हैं और चौंसठ ही थंभ गृदवाय किनार पर लगे हैं और सोरा थंभ की कठेडा है। और चार दरवाजे में कठेडा नहीं तहां आगे तीन-तीन सिढियां है। और तले सेंदुरियां रंग गिलम है ताको चार दोरी गृद फिरी है और ऊपर चंद्रवा रोसन है। मध्य में कंचन रंग सिंहासन है और आगे सिंहासन के दो चौकियां है। सिंहासन के तले छे पाए हैं,तिनके ऊपर छे डाडे हैं,तिन डाडों के ऊपर छे कलस है और दो कलस ऊपर छत्रियों के हैं। चबूतरा की किनार से मंदिर भर चल के एक हार चौंसठ थंभों की फिरी हैं। और थंभों से मंदिर भर चल के साठ मंदिर है तिन साठ मंदिरों के बाहिर एक हार चौंसठ थंभों की फिरी हैं। सिंहासन को छत्री के चालें तरफ जवेरों की झालर हैं। तले छत्रियों के दो फुल लाल मानिक के लटकत हैं कमल केसी निलवी की पांखडी तले मानिक लटकत हैं। सिंहासन के माहें एक गादी दो चाकले और पांच तकिए धरे हैं। श्री राज श्री ठकुरानी जी दोनों चौकियों के ऊपर चरन धरके सिंहासन के ऊपर विराजमान भए । और रुहें बारौं हजार दाडिम की कलियन की भांत सिंहासन के घेर के विराजमान भई।और आपुस में खबरदारी कर लई के हे सखी! श्री राज जी अपने को भूलन को खेल

Nijanand App

दिखावत हैं। जो तें भूल हैं तो मैं तोकों चेतन कर देहों। और जो भूलों तो तें मोकों चेताय दीजो ऐसी मसलत करके बैठी।

अब श्री राज जी ने प्रथम इच्छा श्री भगवान जी पर डारी सो ज्यों जागृत में ब्रह्मांड देखते हते त्यों सुपने में देखने लगे। और खेल की सुरत ने महाविस्नु रुप घर के तीन गुन चौबीस तत्व का ब्रह्मांड खडा किया। तिस ब्रह्मांड के मृतलोक में,जंबू दीप के भरत खंडमें मथुरा मंडल सहित,गोकल वृन्दावन के प्रगट किया। तिसमें नित्य गौलोक और नित्य वृन्दावन का प्रतिबिंब डाला। तिस पाछे श्री राज ने अपनी इच्छा ऊपर श्यामा जी के और सखियन के डाली । तब श्यामा जी और सखियन को बीच मूल मिलावे के हुकम की निद्रा आई। और सुप्न उठा सो श्री श्यामा जी सहित वृज मंडल में गोपन के घर गोप बधू भई। असल तन मूल मिलावे के बीच रहे। और सुपने के तनों से गोपन के गोप वधू भई।

अब पूरनब्रह्म श्री राज वास्ते खेल देखावने के जो सरुप बीच कृष्ण सरुप के आय बैठे। सो संपूरन सखियों को ग्यारह बरस और बावन दिन कई विध के प्रेम रस सों खिलाई। और हजारन विध की लीला करी परंत जोंन दुख इननेण मागा सो न देख पाया। तब श्री राज जी ग्यारह बरस बावन दिन पाछे नित्य वृन्दावन विषें प्राप्त भए और बांसुरी बजाई। सो बांसुरी बजाय के चौदह भवन को मोहित करके गोपयिन के पास अपने बुलाय।तिनसों उथला के वचन कहि के और अजमाईस उनकी लेके साथ उनोके हजारन विध की

आनंद लीला करी। और आधी रात पर अंतरध्यान लीला करके और कई विध को विरह दुख देके फेर प्रगट भए। फेर आनंद लीला करके सबके हृदय को त्रप्त करके फेर सहित सुंदरसाथ के धाम में प्राप्त भए ।

अब तीसरे ब्रह्मांड की लीला दिखायवे के कारन जो रहस खेलने में वृज की ब्रह्मांड की प्रलय कर डारी थी । सो वृज ही के ब्रह्मांड समान तीसरो ब्रह्मांड यह जागनी को प्रगट करो। तिस ब्रह्मांड के प्रगटने मैं पौनें पांच हजार बरस पाछे श्री महंमद साहेब बरारब में आए। तिनको चालीस बरस पर मेहराज हुआ नजीक खुदा के जाके नब्बे हजार हरफ सुने आए। जो कछू भूत भविष्य वर्तमान है सो कुरान में लिख दिया है। और कहा के मेरे सफर से हजार साल में रुह अल्लाह आवेंगे सो दोनों दिन को तारेंगे। फेर पेगंमर के सफर से हजार साल में रुह अल्ला प्रगटे,मारवाड मुलक उमरकोट गांव में । तिनको श्री राज ने साक्षात दरसन देके तारतम सुनाये। ग्यारहीं सदी में इमाम मेहेदी आए सो इलम लुदंनी ल्याए।

और जो-जो कोल माया में काड पालने के अरस में करे थे सो संपूरन लाड पाले। अब हे सुंदरसाथ जी! जागृत और सावधान होके एक बचन सुनो के तुम बीच चौंसठ थंभ चबूतरा के बैठे हो। आगे तुमारे मीठे मासूक बैठे हैं और गृदवाय सिंहासन के मीठी रुहें बैठी हैं। और दसहूं दिस विषें नूर मीठा भरा है और दसूं दिस विषें जिमीन से असमान लों कई कोटि रंग की जोतिका जल भरा है सो

Nijanand App

जोति जल कई विध की मिठाईयां रखता है और हुस्न कीनूर खूबी से मूल मिलावा और साठ मंदिर भरें हैं।और मिठाई अधरामृत की पी–पी के मांदिर थंभ कठेडा चौक चबूतरे गिलम चंद्रवा सुरंग सुर्ख हुए हैं। और अमृततें मीठी प्यारी अपनी–अपनी जोति छोडी है। पूरव के दरवाजे से दक्षिण के दरवाजे लों सोरा थंभ जोति की मीठी धारे चली। सो उत्तर के दरवाजे से पछिम के दरवाजे लों जो सोरा थंभ हैं तिनको लगी। और पूर्व के दरवाजे से उत्तर के दरवाजे लों जो सोरा थंभ हैं तिनसें अत्यंत सुंदर मीठी जोति की धारें चली। सो दक्षिण के दरवाजे से पछिम के दरवाजे लौं जौसोरा थंभ है। तिनकों लगी। पछिम के दरवाजे से दोनों तरफ के से १६–१६ थंभो हैं तिनको लगी। सो साठ मंदिर की जोति की दिवालें हक रंगी हैं और चार दिवालें दरवाजे के थंभो की दुरंगी है।और सुंदर तिखूंटे चौखूटे जोति के चोक परे हैं।और दुरंगी चार दिवालें जो दरवाजें के थंभों की तिनमें चार दरवाजे के मध्य एक चौक पडा है। पूरब पछिम की दो दीवालें नीली हरी हैं और दक्षिण उत्तर की दो दविालें लाल पीली हैं सो मंदिर भर का लम्बा चौडा जो जोति का चौक है सो उसकी पूर्व पछिम की दिवाल नीली हरी मिश्रित है। इस चौक के मदृय सिंहासन मासूक का रख्या हैं तिसमें दोऊ जीव जीवन बैठे हैं। अमृततें मीठी जोति जुगल जीवन की उठी हैं सो चंद्रवा में लगी है। गिलम से चंद्रवालों अत्यंत सुंदर मीठी जोति का एक मासूक थंभ खडा है। उस मासूम थंभ को घेर के । साढे तीन मंदिर के

अंतर से दो हजार रुहों की हार कतार बैठी है चार दरवाजे की मांग छोड के पांच–पांच से रुहन की हार चारों तरफ बैठी हैं मानिंद अनारसाने के गसी हुई। तिस दिवालकों घेर के साढे तीन मंदिर के अंतर से एक चार हजार रुहों की जोति की दिवाल फिरी हैं। इससे भी चारों दरवाजे रोसन हैं। इस दिवालकों घेर के कठेडासों लग के छ:हजार रुहों की कतार बैठी हैं सो अत्यंत सुंदर मीठी जोति की दिवाल फिरी है। और चारों तरफ चार दरवाजे रोसन हैं। सो यह चौसठ थंभ चबुतरा के भीतर अकह अगंम सब्दातीत सोभा हो रही है।और अनु अनुमात्र सकल चीज में दसहूं दिस विषें मीठे मासूक झिलमिलात है। और चौसठ थंभ चबूतरा से साठ मंदिरों के तले जवेरों की पुतलियां और साठ मंदिरों के भीतर जो दो गलियां हैं तिन गलियों में जवेरों की पुतलियां हैं।और जवेरों के पसु पंखी गाते बजाते नाचते हैं। चबूतरों के तले जवेरों की पुतलियां और साठ मंदिरों के आगे पसु पंछी गाते बजाते नांचते कुदते हैं और अंमृतते कोट गुनें मीटे राग रागनियों के स्वर उठते हैं सो सर्वत्र छाय रहे हैं । और मिश्रिसें अत्यंत महा मीठे सब तरफ स्वरन डोरे बँधे हैं। और दम–दम पल–पल अंमृततें मीठी अत्यंत महा पैनी तान टूटत है। तिन तांन टूटने से जड पसु पंखियों के सिर झूंमत हैं। और थंभ कठेडा दर दिवाम घूमत है। और बरबस चित्र के खेंचनें वाली अत्यंत महां सुंदर मीठी जवेरों की पुतलियां नाचत है। कोऊ पुतलियां थंभनसों टिकी खडी है, कोऊ दिवालों से टिकी खडी है, कोऊ

Nijanand App

गावती है कोऊ बजाउती है,कोऊ ताल दे-दे नाचती है और परिक्रमा करती फिरती है। और कोट अंमृततें मधुर सर्वत्र स्वरन की डोरी खिची है ओर राग को मंडल बंधी है। और छिन-छिन पल-पल नवल-नवल अमृत रस की तान पर टूटत हैं। अत्यंत महां अदभुत सुंदर अंमृततें कोट गुने मीठी मासूक जीव जीवन जी आगे विराजे हैं।और अनु अनुमात्र चीजों विषें दसहूं दिस विषें प्रतिबिंब हैं। और दसहूं दिस विष झिलमिलात दिखात है सो दसहूं दिस विषें एक अखंडानंद को सिंध हिलुरत है। बीच ऐसे समय के जुगल जीवन में ऊपर सिर सुरत तुमारी के इच्छा रुपी जादू डाल दिया है। सो सुरत तुमारी ऐसे अखंडानंद सिंध से फिसल परी है। और चरकीनका चरकीन जो चौदे तबक का सुख है तिनमें गिर पडी है। और तिलसम महाल में भूतन के बाजार लगे हैं और भूतन की मिठाईयाँ धरी है तिनमें भूल गई हैं। और माता-पिता भैया बंधु कुटम परिवार में उरझ रहे हो।

हे सुंदरसाथ जी! मासूक तुमारे ने खेल अक्षर का तुमारी ही सुरत के भीतर दिखला दिया है। तुमारी जो पर आतम है ताके हृदय कमल में सुपन द्वारा होके मानिंद ब्रह्मांड के हुकम का ब्रह्मांड बनाया है। और पर आतम के नैन से आतम तुमारी का प्रतिविंब बीच इस ब्रह्मांड के डाला है। सो प्रतिविंब बीच इस ब्रह्मांड के नींद कर वजूद पेहेन के बीच इस जंगल में भूल रही है। और महा घोर दुख अंधकार में फिरत है। हे साथ जी। जो तुमारी जो पर आतम है

ताके हृदय कमल के अंतरगत जो दिल है उस दिल के भीतर यह ब्रह्मांड तिलसका अनुं से छोटा पचास कोट जो जनका लंबा चौडाई दिखाई देता है ऐसे हृदय कमल में दिल के अंदर यह ब्रह्मांड दिखाई देता है। मानिंद मग जल के तिस के अंदरगत पांच तत्व गुन तीन का वजूद तुमारा प्रगटा हैं। इस वजूद के अंतरगत पर आतम के नैनन में जो आतम है तिसको इस वजूद ने पकडा है मानिंद छाया ग्राहनी के। और पर आतम की संपूरन जाग्रत की सामग्री इस वजूद में प्रतिबिंबत हूई है। और इस वजूद से और पर आतम से एक मकरी के तार भर छेह नहीं है। और पर आतम आगे सिंहासन हक हादी के बैठी है। और पर आतम के दसहूं दिस विषें सुधा को सिंधु हिलुर रहो हैं और मीठा खीर सागर लेहेरां लेत है। और आगे हुस्न और आनंद के सिंध मासूक बैठे हैं। और कोट अमृततें मीठे दसहूं दिस विषें राग रागनी सुरन के डोरे खींचे हैं। और दंम-दंम पल-पल अमृततें कोट गुनी मीठी सीतल तान टूटती है।

हे सुंदरसाथ जी! ऐसे महा आनंद सुधा सिंधु से फिसल के सुरत तुमारी बीच अंधकूप दुख अगिन आफत तूफान जम जाचना के गिर पडी। सो तुम को फेर बीच उस सुधा सिंध के पोहोचाउने जगाउने के कारन मासूक दुलहा तुमारे इस माया में माफिक तुमारे देह घर आए हैं। और जागृत बानी कहि-कहि के फेर बीच उसी सुधा सिंध के पोहोचाते हैं। सो यह ब्रह्मांड माया अनु मात्र नहीं है। तुमारे निज सरुप पर आतम में मानिंद तिलसम महल के और

Nijanand App

मानिंद मृग जल के दिखाई देता है। और तुमको दुख आफत तूफान जम जांचना ताहिलों है। जौलों तुम तरफ इसकी चितवन हो और जा छिन तुमने नजर तरफ इसके से फेरी सोईतुम सुधा सिंधुं में हिलुरन लगे। और अमृततें मीठी मासूक को देखने लगे।

हे सुंदरसाथ जी! जाछिन तुम ब्रह्मांड से सूरत फेर के और सूरत को इस बानी मजकूर में रंग के तरफ मासूक की फेरोगे तब तुम ताहि छिन-बीच मूल मिलावे के तालियां देके उठ बैठोगे। आगे बस-प्रनाम जुगल सखी की समस्त सुंदरसाथ को ।।

इति श्री

श्री युगलदासजी महाराज कृत

मनमोहन रसानंद सागर समाप्त

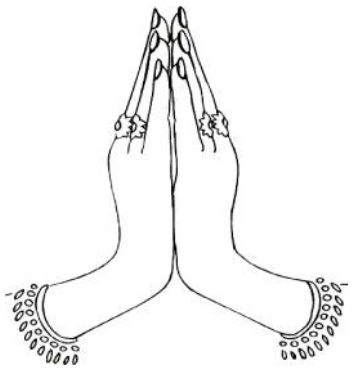

प्रणाम जी

Nijanand App

।। कठिन शब्दों का अर्थ।।

अलगोजो– एक प्रकार का बांसुरी
अनी– नोंक,सिरा
अदा– अंगचेष्टा,पूरा,चुकता
अलझुले– मदोन्मत
आदाब–प्रणाम,नमस्कार
आरोहण– चढना
इस्तादे– खडे होना, सीधे होना
उझकैयां– जल को उडेरना,फेंकना
उपराजी– उत्पन्न कराया
ऐंडाती– गर्वयुक्त अंग मरोडना
ऐंचना– खीचना
कठताल– वाध्य विशेष
करताल– वाध्य विशेष
किलाए– सिर में
कुसादे – फैलाकर,फैलाव
कोतल –सजाया हुअ वाहन
कोडा – चाबूक
कोटे– किल्ला,करोड
कोड– फिराना,मरोडना
षटताल– एक प्रकार का बाजा
खटताल– एक प्रकार का बाजा
खकी– अकथनिय
खम्मायचे– बाजा का काम
गदको– डण्डा,लाठी
गादर– अधपक्के
गुल– रौनक,शोर
घाले– छोडना, डालना
चमचमाते– चमकाते
चिबुक– ठोढी,चिउंडो
चुचात– टपकाना
चोपदारी– चौकीदारी
छाबला– बास की बनी टोकरी
छावला–हाथी के बच्चे
छिटकाई झार– जल उछालना, छिंटा मारना
छौना– हंस के बच्चे
जमाल– अति सुंदर
जोनों– जाति
जोइ–जिन
जेंवत– जिमना,आरोगना
झवियां– फूमक
झहलाने– झनकार करने
डांग– लाठी,डंडा
तलातल– भरपूर
तजल्ली– प्रकाश
तुरंगो–घोडें
तूती– छोटी जाति का तोता
तेजतर– शीघ्रता से
दमादम– लगातार,बराबर
दबदबा– रोब,प्रभाव

देज– छिद्र
दमानक– प्रेम का धक्का, जल धारा
दामन– पल्ला,पीछे पडना,अंचल
दामनगीरी– दावेदार,पीछे पडनेवाला
दुती–दूसरा
धसके– घुसके
धाक– भय
धुरपद– गाना,राग,ताल
धुसार– ध्वनि
धोंसा– नगारा पर चोट माारना, नगारा
नक्कारें– नगाडा
नास्त– नदी
नूरतजल्ला– अक्षरातीत
नितंब– पीठ के नीचे जांघ के उपरी अंग
निपट– अधिक,बीलकुल
पनाह– शरण,रक्षा
पुस्तखंभ– पीठ नमाकर प्रणाम करना
पीडी– सवारीका साधन
पीक– कोयल
पेदरपें– क्षण–क्षण
पेखती– देखती
पैनी– अनीदार,तिक्षण
पोईयों– घोडे की चाल से चलना
बरत– रस्सी
बंदा– गुलाम,दास
बान– तीर,स्वभाव
बाञ्य–(बाह्य)बाहर
बलबाल– जरेजरा
बिलोकती– देखती
बिक– भेडिया हिंसक जाति
बुलंद– बडा भारी
बेकल–व्याकुल
बेखुद– बेहाल
बेकरार– विकल
बनरे– दुल्हा
बनरी– दुल्हीन
भरत– देना
मजा– लजत
मनमुकता– मन के अनुसार
मरातिव– पदवी
मसकत– जोर से
मतवार– मस्त
मतंग– हाथी
मझियायेके– उलंघ करके, पार करना
माजरा– मामला,घटना
माबूद– मालिक

Nijanand App

मिसल– जमात
मुतवजहे– ध्यान दिये,तैयार हुए
मुजरा– दर्शन
मुतवातर– बारंबार
मुस्तैद– तत्पर
मुरावत– चबाना
मुस्ताक–इच्छुक
मुबारक– शुभ
मुचँग(मोहचंग)– बाजा का नाम
मुतलक– निश्चय
मूर–मूल
मेढे– मेष,भेड
मोकले– खुल्ला,साफ
मेलते– मिलाने
युसफ– खूब सुंदर
रोस(रौस)–बाग में क्यारियों के
बीच का मार्ग महलो के
चारों ओर का मार्ग
रसूल– पत्रबाहक
रमूज– इशारा
रिंगावते– चलावते
लबालब– परिपूर्ण
लदाऊ– भार,लादने की क्रिया
लहकत– लहराना,झोंके खाना
लफत– झूकना,लपकना
लग्गी– लाठी
लामुंतहा– जिसका आदि अंत नहीं
लालमुनैयों– पक्षी विशेष
लोंदे– गीले पदार्थ का पींड
वज्हे– प्रकार,कारण
वफहात– बफाया हुआ
वरजिद– विना रोकावट के
विलोकना– देखना
शराब– प्रेम
शैन–इशारा,संकेत
सध्य–तुरंत,ताजा
सफ– पंक्ति,कतार
सतेसों–नौकायें
सरई–भूषण विशेष
सरसार– उन्मत्त
सरसार– मन्मत्त
सिताबतर– जल्दी से,शीघ्रता से
सिताब– तुरंत
सुर्खे– लाल
सुतर(शुतुर)–ऊँट
सोरसरावा– चहल–पहल
हुलना– चुभोना,पैठाना
हौदा–अंबारी

Nijanand App